॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

सितम्बर, 2014 वर्ष 17, अंक 9
विक्रमी सम्वत् 2071
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

स्वाधीनता के मायने

❐ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

एक माह पूर्व हमने अभी 68वां स्वाधीनता दिवस मनाया। क्या आप सहमत है कि स्वाधीनता शब्द के अर्थ के अनर्थ से एवं इसके दुरुपयोग से वर्तमान समय में हमारे देश में बहुत सी समस्याएं पैदा हो रही हैं। हम स्वतन्त्र देश के नागरिक यह समझते हैं कि हम जो चाहें जब चाहें जैसे चाहें करने के लिए स्वतन्त्र हैं और हमें कोई भी रोक नहीं सकता। आज इस देश का नागरिक स्वतन्त्रता के इसी अर्थ के अनर्थ के कारण अपनी भौतिक प्रगति को लेकर अपने लाभ के लिए स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने अधिकारों के प्रति अत्यंत सजग है लेकिन कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया उदासीन है। हम समझते हैं कि स्वाधीनता हमें हर प्रकार के नियमों कायदे कानूनों के बंधन से मुक्त करती है। व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय नियमों कानूनों के बंधन से मुक्ति का भाव और केवल स्वयं के भौतिक सुखों की प्राप्ति की तीव्र इच्छा के वशीभूत आज इस देश का नागरिक हर प्रकार का अनाचार कर रहा है और इससे भी बढ़कर यह कि अपने इस अनाचार को वह अपना अधिकार मानकर अपनी स्वाधीनता की दुहाई देता है। इसीलिए आज इस देश का नागरिक व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर अधोगति की ओर फिसल रहा है। अन्यथा एक राष्ट्र की आयु के संदर्भ में 60-62 वर्ष की आयु मात्र बाल्यावस्था मानी जाती है और अपनी इतनी कम आयु में राष्ट्र का इतनी व्याधियों से ग्रस्त हो जाना इसी बात का द्योतक है कि राष्ट्र की तथाकथित विकास की दिशा और दशा ठीक नहीं है। राष्ट्र के नागरिक अधिकारों के प्रति उग्र लेकिन कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया उदासीन हैं और इसे स्वाधीनता के दायेर में रखते हैं।

दरअसल स्वाधीनता के मायने क्या है इसे समझे बिना हम समस्याओं का इलाज नहीं कर सकते। जिस प्रकार कोई डाक्टर बिना बीमारी की मूल जड़ को जाने उसका इलाज नहीं कर सकता। पाणिनि अष्टाध्यायी के सूत्र स्वतन्त्रः कर्ता 1/4/54 के अनुसार मनुष्य किसी कार्य को करने, ना करने वा अन्यथा करने के लिए स्वतन्त्र है परन्तु स्वतन्त्र कौन है जिसकी इन्द्रियां, मन, बुद्धि, प्राण, अन्तःकरण उसके आधीन हैं। इसे एक आसान उदाहरण से समझते हैं जिस प्रकार किसी वाहन का चालक केवल तभी तक दुर्घटना से बचा रह सकता है। जब तक वह ना केवल वाहन को अपने आधीन रखता है तथा यातायात के नियमों के अनुसार चलाता है और यदि चालक शराब के नशे में या तीव्र गति के रोमांच के कारण वाहन पर नियंत्रण खो बैठता है और नियमों को तोड़ता है तो दुर्घटना अवश्यम्भावी है। ठीक उसी प्रकार जब मनुष्य का साधन अर्थात् इन्द्रियां, मन, बुद्धि आदि उसके आधीन होती है और वह सामाजिक राष्ट्रीय नियमों कानूनों का पालन करता है तभी तक मनुष्य की जीवन यात्रा कुशलतापूर्वक चलती है और यदि उलटा हो गया और मनुष्य अपने साधनों के आधीन हो गया अर्थात् मन बुद्धि इन्द्रियों पर उसका नियंत्रण नहीं रहा और वह भौतिक सुखों की चाह में मन इन्द्रियों का दास बनकर सामाजिक राष्ट्रीय नियमों कानूनों को तोड़ने लगा तो निश्चित रूप से अपनी स्वयं की जीवन यात्रा को तो अधोगति की ओर ले जायेगा अपितु समाज राष्ट्र में भी लूट, चोरी, भ्रष्टाचार, भूख, गरीबी जैसी बीमारियों को जन्म देगा।

मनमानी से गर चलो, तो तुम मन के दास।
भोगोगे फिर दंड यहां, होकर खिन्न उदास॥

अथर्ववेद में अश्वस्य वारो गोशपद्यके। 20.129.18 द्वारा वेद भगवान ने मनुष्य को संदेश दिया हे आत्मन्! तू घुड़सवार होकर घोड़े के खुरों में कुट पिट रहा है। मनुष्य इन्द्रियों की विषय वासना में फंसकर मन का दास बनकर रह रहा है। मनुष्य इन्द्रियों रूपी घोड़ों की सवारी करके रईस बनने के स्थान पर उन घोड़ों की सेवा करने वाला स्वाधीन कैसे कहला सकता है वह तो उल्टे अपने ही साधनों के अधीन हो गया। सामवेद में भी **अहं गोपतिः स्याम्।** 18/35 कहकर मनुष्य को इन्द्रियों रूपी गौओं का स्वामी बनने का आदेश दिया। यह ठीक है कि अत्यंत गतिशील मन एवं चंचल इन्द्रियों को बस में करना दुष्कर कार्य है परन्तु मनुष्य यदि इनका स्वामी बनकर रईस घुड़सवार बनना चाहता है तो अभ्यास वैराग्य द्वारा इन्हें बस में करना चाहिए। हमें सभी साधनों विशेष रूप से मन बुद्धि इन्द्रियों को अपने आधीन करके अर्थात सही अर्थों में स्वाधीन होकर सामाजिक, राष्ट्रीय नियमों का पालन करते हुए कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। कर्तव्य पालन के समय अधिकार स्वतः प्राप्त होते हैं। बिना कर्तव्य जाने अधिकार मांगना अनुचित है। यजुर्वेद में भी अदीनाः स्याम शरदः शतम्। यजु. 36/24 द्वारा सौ वर्षो

(शेष पृष्ठ 18 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ऐसा प्रभाव था महात्मा आनन्द स्वामी जी का

महात्मा आनन्द स्वामी जी को उत्तरभारत में बीसवी शताब्दी के स्वामी दयानन्द मानते थे। आनन्द स्वामी के उपदेशों में एक जादू था, जो सुनता था मोहित हो जाता था। स्वामी जी जब दिल्ली में आते थे तो पंडारा रोड में हाँडा जी के घर रहते थे, उनके साथ जो ब्रह्मचारी आते थे वह हमारे पास रहते थे। एक बार जब स्वामी जी आये उस समय तीन छुटियाँ थीं, मैने स्वामी जी से यहां क्यों न आप का तीन दिन उपदेश हो जाये, स्वामी जी मान गये। मैं लोक सभा में काम करता था। लोक सभा में हिन्दी समाचार पत्रों के रिपोटर्स आते थे, मैंने उन को कहा कल से पंठरा रोड में आनन्द स्वामी कथा करेंगे अपने Today`s engagement column में यह समाचार दे देना।

दूसरे दिन स्वामी जी कथा में एक हजार से अधिक लोग आ गये। कथा समाप्त होने पर में जब घर पहुंचा तो ट्रेफिक पुलिस के अफसर आ गये कहने लगे आप ने हमे बताया क्यों नहीं स्वामी जी आ रहे हैं। सारा ट्रेफिक इंडिया कल्चर तक जेम हो गया है, लोग फोन पर फोन कर हैं। मैंने कहा हम ने तो कोई विज्ञापन किसी समाचार पत्र में दिया ही नहीं अफसर ने कहा स्वामी जी के लिए विज्ञापन देने की जरूरत ही नहीं। आज समाज को आनन्द स्वामी जैसे स्वामी की आवश्यकता है। हर समाज में रविवार के सत्संग में केवल कुछ सफेद बालों वाले लोग ही दिखाई देते हैं। **-देवेन्द्र गठोक, आर्य समाजपूना**

केवल विज्ञान ही नहीं अध्यात्म भी आवश्यक

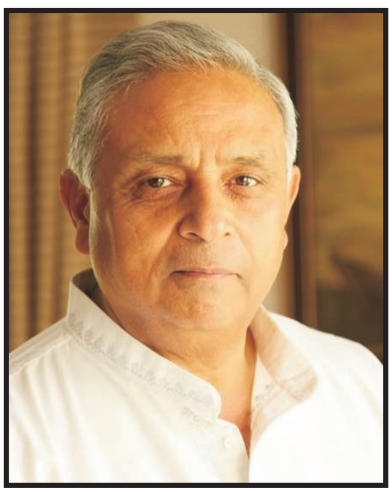

पूरा भूमण्डल असंख्य समस्याओं से घिरा पड़ा है। चारो ओर समस्याएं ही समस्याएं हैं। मनुष्य को तो इतनी समस्याएं है कि वह स्वयं एक समस्या बना पड़ा है। मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बना हुआ है। एक देश दूसरे देश का, एक राजनैतिक पार्टी दूसरी की। यहाँ तक की दो देशों में मान्यताओं के आधार पर नरसंहार हो रहा है। मनुष्य उपरोक्त समस्याओं को स्वयं ही बना कर परेशान है और न खत्म होने वाली भुख। अन्न की कमी कई देशों की समस्या बनी हुई है। विज्ञान की आधुनिकताओं से नए से नए बीमारियों और मृत्यु का डर, और लोग अभी तक इस प्रश्न का उत्तर नहीं पा सके कि मृत्यु के बाद क्या? कहा जाता है लोग शरीर के उपरान्त क्या आत्मा भी मर जाती है? अपने मतो के आधार पर लोगों ने भिन्न मान्यताये बना रखी है।

विज्ञान के विकास के बाद हमें जो सुविधायें प्राप्त हुई है वह शणिक है। भौतिक सुख की प्रदाता है। शारीरिक सुख का अनुभव है। पर मन की भूख। मन के सुख का क्या उत्तर है विज्ञान के पास?

एक उदाहरण बात को समझाने का प्रयत्न करते है। एक बार आचार्य विदुर भारत भर्मण के लिए निकले और लौटकर इन्द्रप्रस्थ वापस आए और राज्य सभा में बताया कि मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से जकड़ा पड़ा है। मनुष्य की आज स्थिति कैसी है। वह आप को बताता हूं।

एक बार एक मनुष्य घने जंगल में जा पहुंचा। वहां भयानक जंगली जानवरों को देख कर घबराया। उसने देखा पांच नाग फन फैलाये उसकी तरफ देख रहे है और साथ ही एक अति वृद्ध स्त्री खड़ी है। वह डर कर जंगल में भटक रहा था कि अचानक पत्तों से घिरे एक गढ्ढे में गिर गया और एक पेड़ की टहनी को पकड़ तने में लटकता रहा। नीचे देखा तो एक अजगर मुंह खोले बैठा है। ऊपर पेड़ की टहनी को एक सफेद और काला चूहा कुतर रहा है। जो कि उसके बचने की आखरी आस है, तभी एक 5 मुख वाला हाथी वहां से गुजरा और लगा पेड़ के तने को हिलाने लगा जिसकी टहनी से मनुष्य लटका हुआ है। आचार्य विदुर आगे समझाते है कि मनुष्य आप और मैं हम सब है और जंगल यह सारा संसार है। भयानक जानवर दु:ख, डर और मौत का भय है। पाँच सांप है काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार है। बड़ी स्त्री वह बुढ़ापा है जो आके जाता नहीं, जीने की आशा। तमन्ना थी वह टहनी जिससे मनुष्य लटका हुआ है गढ्ढे के नीचे अजगर प्रतीक है मौत का जो सबको आनी है। राजा हो या रंक।

5 मुंह वाला हाथी जो पेड़ के तने को हिला रहा है एक साल 5 मौसमों वाला और जो टहनी को चुहे कुतर रहे है वह है दिन और रात जो पल पल हमें मौत की और बड़ा रहे है। आचार्य कहते है ऐसी समस्याओं में क्या है? मनुष्य सुखी उपनिषदो में इसका उत्तर कुछ इन वाक्यों के माध्यम से समझाते है कि मनुष्य दुखी मत हो। इस भवसागर से, समस्याओं से, निकलने का रास्ता है जिस रास्ते पर संत, महात्मा, संन्यासी इस सागरभव को पार करेगा। वह केवल एक ही रास्ता है जो आध्यात्म के रास्ते से निकलता है। अपने जीवन को अध्यात्म से जोड़ो। छन्दोपनिषद् इसी की व्याख्या करता है।

(डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिती की त्रैमासिक अंतरंग सभा में आर्य पुत्र/प्रधान श्री पूनम सूरी जी द्वारा दिए गए वक्तव्य के कुछ भाग)

स्वतन्त्र भारत में परतन्त्र होती भारतीय मानसिकता

वर्तमान में स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्तर पर लाल किला पर अपने स्वतन्त्र होने के वर्ष से ही प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से उत्सव आयोजित किया जाता है। वर्ष 1963 की बात है, जब मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता था तो इस उत्सव में सम्मिलित होने की उत्सुकता अपने पिताजी को प्रकट की। पिताजी सूर्योदय से पूर्व ही मुझे साईकिल पर बिठाकर लालकिले की ओर चल पड़े। रास्ते भर सभी लोग हाथ में राष्ट्रीय ध्वज लिये बड़े उत्साह से लाल किला की ओर बढ़ रहे थे। अपने घरों से हर गली कूचे से निकलकर व्यक्ति बड़े उत्साहपूर्वक जैसे मानों अपने घर का ही कोई उत्सव हो उसको मनाने हेतु घरों से बाहर आ रहे थे। हर व्यक्ति के मुख पर खुशी और उल्लास था। कहीं–कहीं केवल मार्ग दर्शन करने हेतु पुलिस का एक सिपाही नजर आ जाता था। सारे रास्ते जैसे मानो उत्सव स्थल की ओर ही बढ़ रहे हों।

तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू लालकिले से पूर्व महात्मा गांधी की समाधि पर श्रद्धांजलि हेतु जाया करते थे। इसी कारण हम भी पहले वहीं पहुंचे और बिल्कुल समाधि के निकट पहुंच गये और श्रद्धांजलि देने के उपरांत पंडित नेहरू ने जनता की ओर बढ़ते हुए कुछ बच्चे को अपनी ओर आकर्षित किया, उनमें मैं भी एक था। उन्होंने कुछ बच्चों का प्यार से माथा चूमा और उपहार स्वरूप फूलमालायें भी दी। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे अपने घर का ही कोई बड़ा बुजुर्ग आशीर्वाद दे रहा हो। जनता और नेताओं में कितनी आत्मीयता और अपनापन था। इसके उपरान्त उत्सव स्थल पर मानों एक मेले जैसा माहौल हो, कहीं आने जाने की रोकटोक नहीं, केवल नाम मात्र को पुलिस की व्यवस्था।

वर्ष बीतते गए और जब मुझे स्वयं कुछ वर्ष पूर्व अपने बच्चों को लेकर इस उत्सव में जाने का अवसर प्राप्त हुआ तो स्थिति में सर्वथा विपरीत परिवर्तन पाते हुए मैं अचम्भे में रह गया। जगह–जगह रास्तों पर अवरोध खड़े किए गये थे ताकि राष्ट्रीय नेता उस रास्ते में निश्शंक गुजर सकें। उत्सव स्थल तक पहुंचते–पहुंचते चार पांच बार सुरक्षा के नाम पर हमारी जांच एवं तलाशी ली गई। निमन्त्रण पत्र न होने के कारण लाल किला से बहुत दूर ही हमें रोक दिया गया। आमन्त्रित लोगों के लिए पूरी व्यवस्था बैठने की कुर्सियों सहित थी। हम उत्सव की गतिविधियाँ सुन सकते थे, देख नहीं सकते थे। उत्सव की शोभा जनता से होती है, लेकिन यहां की शोभा पुलिस एवं उसके खोजी कुत्ते बढ़ा रहे थे। राष्ट्रीय नेता ऐसे लग रहे थे जैसे कोई ब्रिटिश साम्राज्य का वायसराय अथवा गर्वनर हो। आम जनता के लिए रास्ते इस तरह बन्द थे जैसे पूर्व काल में शिमला माल रोड पर भारतीयों का जाना बन्द था। यह सब देखकर इतना विचित्र लगा कि स्वतन्त्रता के 67 वर्ष उपरान्त भी वही मानसिकता विद्यमान है जैसी स्वतन्त्रता के पूर्व की स्थिति हो।

आज स्थिति यह है कि सभी घर बैठकर टेलीविजन पर ही इस उत्सव को देख लेते हैं और उसमें भी सम्भवतया केवल पुरानी पीढ़ी के लोग ही। क्या नई पीढ़ी के लिए हमारी स्वतन्त्रता का कोई महत्व नहीं। हमारा इस दिवस के प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं। ठीक ही कहते हैं कि स्वतन्त्रता का मूल्य तो वही जान सकते हैं, जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया है अथवा गुलामी देखी हो। जो स्वतन्त्र भारत में जन्म उन्हें इसके महत्व की जानकारी नहीं है। इसमें दोष युवाओं का है अथवा हमारा यह गम्भीरता से सोचने का विषय है। आज भारत में बढ़ती अंग्रेजियत हमें कहां ले जायेगी, यह भी विचारणीय एवं चिन्ता का विषय है। वर्तमान में टी.वी. चैनलों और इन्टरनैट हमें कहां ले जायेगा, इसे भी हम भलीभांति महसूस कर सकते हैं। हमारी सांस्कृतिक धरोहर पर दिन–प्रतिदिन प्रहार हो रहे हैं, टी.वी. चैनलों के माध्यम से हम अपने बच्चे सहित इन प्रहारों का आनन्द लेते हैं और खुशी से उनमें सम्मिलित होते हैं। जब हमारी संस्कृति पर प्रहार होता है तो हमें हंसते हुए देख कर बच्चे अपने मन में सोच लेता है कि मेरे बड़े बुजुर्ग उससे सहमत हैं, जो टी.वी. कार्यक्रमों में दिखाया जा रहा है। टी.वी. चैनल पिछले कई वर्षों से प्रतिदिन हमारे बच्चों पर दुष्प्रभाव डाल रहा है और वह उनके मन मस्तिष्क पर पक्का होता जा रहा है।

युवाओं के कपड़े पहनने का ढंग, बाल कटवाने का ढंग, बातचीत करने का ढंग, खाने–पीने का ढंग, सभी में आप हमारी संस्कृति की अर्थी उठते देख सकते हैं। मैं अधिक गहराई में नहीं जाना चाहता। आप सभी अपने आसपास ऐसे ही माहौल को महसूस कर रहे हैं, लेकिन कुछ कर नहीं पा रहे हैं अथवा कुछ करना नहीं चाहते हैं? क्या आपको नहीं लगता जैसे कि यह एक बड़ी सोची समझी साजिश का हिस्सा हो और जिसमें हम फंसते चले जा रहे हैं? क्या यह टी.वी. चैनल के माध्यम से ईष्ट इण्डिया कम्पनी का पुनरागमन तो नहीं? अगर आप मेरी इस बात से सहमत हों तो अभी चेतिये और अपने–अपने माध्यम से इस षड्यंत्र को विफल करने में सहयोग दीजिए, कोई व्यक्ति कुछ करेगा, ऐसा सोचकर मत बैठे रहें, किसी भी स्तर पर इस टी.वी. चैनल का अवश्य बहिष्कार करें और भारत में इसका प्रचलन बन्द करने का आन्दोलन करें।

इस देश को देश हम बनायेंगे
मिलकर हम सब कुरीतियों को मिटायेंगे
है ये वादा अगर साथ दें सब लोग
चाँद पर भी ओ३म् ध्वज लहरायेंगे।

आर्य समाज ने इस ओर एक बहुत बड़ा योगदान दिया है। विशेषकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की युवा टीम ने श्री विनय आर्य के नेतृत्व में आधुनिक मीडिया टेक्नोलॉजी की मदद से अब इंटरनेट पर आर्य समाज, आर्य समाज की जानकारी, आर्य समाज के भजन, आर्य समाज के वेद प्रवचन, पूरी सत्यार्थ प्रकाश एवम् वेद के कुछ अंश भी उपलब्ध है। उनके द्वारा संस्कार चैनल जो कि आर्य समाज का अपना चैनल होना था उसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई लेकिन प्रयास जारी है। वर्तमान में आस्था चैनल और साधना चैनल पर आर्य समाज के भजन एवम् प्रवचन प्रतिदिन उपलब्ध हैं। आर्य परिवारों के अविभावक अब बच्चों को कह सकते हैं कि आप यह सब देखें। क्योंकि आज से पूर्व यह सब चीजें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर उपलब्ध नहीं थी।

जहां तक इस वर्ष के स्वतन्त्रता दिवस की बात है, मैं अपनी पोती को लेकर लाल किले पर गया। पुलिस का बंदोबस्त आज से पूर्व जैसा ही था लेकिन विनम्रता एवम् सकारात्मक सोच वाला। एक सहायक के रूप में पुलिसवालों ने हमें वहां तक निसंकोच उत्सव स्थल तक पहुंचा दिया। सरकार की ओर से मुफ्त सरकारी बसें उपलब्ध थी। आम जनता को खुला निमन्त्रण भी था। अपना बाल्यकाल की चर्चा जो मैंने प्रारंभिक पंक्तियों में की है अब कहीं मेरी पोती ने जाकर उसी प्रकार से इस उत्सव का आनन्द लिया। वर्तमान के प्रधानमन्त्री/सेवक ने खुले दिल से सभी पुलिस की सुरक्षित व्यवस्था की अनदेखी करते हुए बच्चों में आकर उनसे मिले और उत्साह बढ़ाया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वही पुराने दिन आने वाले हैं।

अजय टंकारावाला

विचारों की उथल-पुथल के मध्य क्षणिक मौन

❒ रमेश चन्द्र पहूजा, यमुनानगर

किसी एक समय, हमारे मन में केवल एक ही विचार होता है। हमारा अगला विचार क्या होगा, कोई नहीं जानता। परन्तु जब भी अगला विचार आता है उसका पिछले विचार से कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य होता है। इस सम्बन्ध में कोई तर्क हो सकता है और नहीं भी। यह सम्बन्ध सीधा-सीधा भी हो सकता है अन्यथा भी। यह एक शब्द, लय, एक घटना, एक दृश्य, पूर्व जन्मों के संस्कार आदि के रूप में हो सकता है। परन्तु यह तो सत्य है कि किसी भी एक समय, हमारे मन में केवल और केवल एक ही विचार उत्पन्न होता है।

जप या मन्त्र-साधना के द्वारा हम मन में उठने वाले विचारों की उथल-पुथल को रोक सकते हैं, उन्हें एक दिशा दे सकते हैं। जप क्या है? यह है एक ही शब्द या मन्त्र/श्लोक का बार-बार दोहराना। प्रायः हमें यह ज्ञात नहीं होता कि हमारा विचार क्या होगा परन्तु जब हम जप कर रहे होते हैं तो हमें भली-भाँति मालूम होता है कि हमारा अगला शब्द/विचार क्या होगा। जब हम निश्चय कर लेते हैं कि हम एक शब्द/मन्त्र का लम्बे समय के लिए जाप करेंगे तब हमें एक कला मिल जाती है, टेक्निक मिल जाता है अपने मन को केन्द्रित करने का, अनुशासित करने का। अपने मन को दिशा देना या अनुशासित करना जप-विधि की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। Mental discipline is one important achievement of 'Japa' as a technique. जप के द्वारा हम आकस्मिक विचारों से सुरक्षित हो जाते हैं, हमें अपने स्वरूप को जानने का एक मार्ग मिल जाता है, एक अवसर मिल जाता है।

यद्यपि मन में एक के बाद एक विचार उठते रहते हैं तथापि क्रमबद्ध दो विचारों के मध्य में एक अवकाश होता है जो हमें अपने स्वरूप से परिचित कराता है और वह परिचय है कि हम विचार नहीं अपितु दो विचारों के मध्य साइलेंस हैं, मौन हैं, शून्य हैं। इस बिन्दु पर पुनः चिन्तन करते हैं। विचार उत्पन्न होते हैं, समाप्त हो जाते हैं। प्रत्येक विचार के पहले शान्ति हैं, मौन हैं और विचार के उपरान्त भी वही शान्ति। तो फिर मैं क्या हूँ। विचार के पहले भी मैं शान्ति हूँ, मौन हूँ विचार के उपरान्त भी मैं शान्ति हूँ, मौन हूँ। इसलिए विचारों के होते हुए भी, मैं मौन हूँ। यही मेरी प्रकृति है, स्वभाव है, धर्म है। जप के द्वारा ऐसी मानसिक स्थिति उत्पन्न हो जाती है, बाह्य-वृत्ति रूक जाती है। जप की यह दूसरी उपलब्धि है।

एक साधक सतत् अभ्यास के द्वारा इस मौन की अवधि को बढ़ा अर्न्तमुखी हो जाता है, प्रभु का चिन्तन/ध्यान करने लगता है। मौन की अवधि को बढ़ाने का स्तम्भ वृत्ति प्राणायाम एक सुन्दर और सरल उपाय है। कुछ साधकों का भी यही निष्कर्ष है- **चले वाते चलं चित्तं, निश्चले निश्चलं भवेत्।**

परन्तु मन तो एक नटखट, चंचल बालक की तरह है। जब बालक को एक नया खिलौना दे दिया जाता है तो वह सब प्रकार की शरारतें छोड़ उसके साथ खेलने में मस्त हो जाता है। कुछ समय के उपरान्त, उस खिलौने से ऊब कर उसे फैंक देता है और फिर शरारतें करने लगता है। यही अवस्था हमारे मन की है। जब हम एक ही शब्द, मन्त्र या भजन की एक पंक्ति का जप करते रहते हैं तो ध्यान बिखरने लगता है और हम यन्त्रवत ही जप करते रहते हैं। मन जप में नहीं रहता। मन को वापिस लाने का एक सरल उपाय है। मन को जाप के लिए नया शब्द/मन्त्र दे देवें। प्रभु के अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव हैं। अपनी-अपनी एकाग्रता के अनुसार, अपनी ही सहज भावना से अपने ही शब्दों में किसी एक गुण, कर्म, स्वभाव का अर्थ सहित चिन्तन करें जैसे ओ३म्..... ओ३म्..... ओ३म्..... जब मन भागने लगे तो ओ३म् आनन्दम् ओ३म आनन्दम्. .... पर मन की सुई को टिका दें। इसी प्रकार ओ३म् निराकार..... . ओ३म् निराकर...... ओ३म् सर्वशक्तिमान, ओ३म् सर्वशक्तिमान आदि-2, कहाँ तक भागेगा यह मन?

ईश्वर हम पर कृपा करें। हम विवेक, वैराग्य और अभ्यास के द्वारा मोक्ष के पथ पर अग्रसर हों।

- 541-एल, मॉडल टाऊन, यमुना नगर-135001

गौ-दान : महा-दान

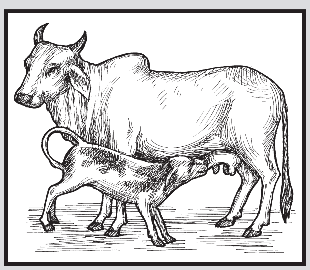

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

परमात्मा सर्वोतम प्रबन्धक है

❒ कन्हैयालाल आर्य

आधुनिक युग प्रबंधकों का युग है। एक से बढ़कर एक प्रबन्धक की चर्चा आये दिन होती रहती हैं, परन्तु मैं संसार के आधुनिक प्रबन्ध कों को यह बताना चाहूँगा कि सबसे बड़ा प्रबंधक परमपिता परमात्मा है। उसने प्रकृति की प्रत्येककृति का जिस तरह प्रबंधक किया है वह तो हमारी समझ की सीमा से भी परे है।

आइये, हम सबसे पहले अपने शरीर की रचना पर विचार करें। परमात्मा ने शरीर के एक-एक अंग की जिस प्रकार रचना की है उसे देखकर मानव बुद्धि चकरा जाती है। चाहे नेत्र रचना हो, हृदय की धड़कन हो, बिना कब्जे के एक-एक हड्डी को दूसरे के साथ किस प्रकार जोड़ा है। एक व्यक्ति के गले की आवाज दूसरे से नहीं मिलती, एक व्यक्ति की उंगलियों के चिह्न दूसरे व्यक्ति की उंगलियों के चिह्नों से नहीं मिलते, एक व्यक्ति का स्वभाव दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलता। किस-किस बात की चर्चा की जाए, हर बात की उसकी निराली है। एक जीवात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव दूसरे जीवात्मा से नहीं मिलते। इससे बड़ी उसकी विचित्रता और प्रबंध व्यवस्था क्या हो सकती है? विशेष बात यह है कि बड़े से बड़े शरीर-वैज्ञानिक उसकी रचना और व्यवस्था को पूरी तरह समझ भी नहीं पाये हैं।

आइये, अब कुछ फलों की चर्चा करते हैं। केला एक ऐसा फल है जिसको ढकने के लिए प्रभु ने एक खोल उसको दिया है। प्रभु जानता है कि मेरे पुत्र एवं पुत्री को जब हलवा खाने की आवश्यकता हो तो वह हलवा बाहर की धूल मिट्टी से बच कर रहे, इसीलिए उस पर एक खोल बना दिया। सन्तरे को लें। सन्तरे के बाहर एक छिलका लगा दिया। इतना ही नहीं छिलके के अन्दर सन्तरे के रस के लिए कई प्रकार के छोटे बड़े डिब्बे बना दियो और उसमें उस सन्तरे के रस को रख दिया। इतना ही नहीं परमात्मा ने विचारा कि मेरा भक्त सन्तरे को पुन: खायेगा तो बोने के लिए उसका बीज उसके अन्दर रख दिया। अनार को लीजिये। अनार के बाहर खोल बनाया। अन्दर कई प्रकार के छोटे-छोटे विभाग बनाये। विभागों में फिर कई प्रकार के उप विभाग बना दिये। फिर जा कर कहीं दाने डाले और दानों में भी प्रत्येक दाने में एक छोटी से गुठली उसको सुरक्षित रखने के लिए डाल दी। हे प्रभु! तेरी रचना और उसका प्रबन्धक देखकर मानव बुद्धि चकरा जाती है।

मुझे एक बार किसी कार्यक्रम में हरिद्वार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। किसी परिवार में जा कर ठहरा। जब प्रात: काल हम नाश्ते पर बैठे थे तो गृहस्थ परिवार मुझसे पूछने लगा-पण्डित जी आप पपीता खाओगे? हमारे यहाँ पपीते का एक पेड़ है, वहाँ दो पपीते प्रतिदिन पक जाते हैं। मुझे प्यार से वे 'पण्डित जी' इसलिए पुकारने लगे थे कि उन्हें पता लग गया था कि मैं यज्ञ आदि कर्मकाण्ड के कार्य बहुत अच्छे ढंग से करा लेता हूँ। मैं कुछ विद्वानों के संपर्क और सत्संग में आकर कुछ कर्मकाण्ड की क्रियाएं सीख गया हूँ। अत: लोग मुझे जब पण्डित जी कहने लगे तो मेरा वह मित्र जिनके यहाँ मैं ठहरा हुआ था वह भी पण्डित जी कहने लगा। मैंने उनसे प्रश्न किया कि एक मौसम में कितने पपीते लग जाते हैं? तो उन्होंने बताया कि लगभग 40 से 50 पपीते एक मौसम में लग जाते हैं। मैंने उनसे कहा कि केवल एक या दो पपीते ही क्यों पकते हैं? एक साथ क्यों नहीं पकते? उन्होंने जो उतर दिया वह मेरी शंका का समाधान था। वह पुन: कहने लगे, पण्डित जी परमपिता परमात्मा बड़ा ही दयालु है। वह सोचता है, यदि मैं सारे के सारे पपीते एक बार पका दूं तो मेरा पुत्र और पुत्रियाँ उन सभी को एक साथ नहीं खा पायेंगे। या तो उन्हें बेच डालेंगे या वे गल जायेंगे। इसीलिए परमात्मा ने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि मेरी संतान को यह अमृत फल मैं प्रतिदिन दूँ। इसीलिए प्रतिदिन एक या दो पपीतों को ही पकाता है। उसकी व्यवस्था में कहीं भी दोष नहीं, वह एक उत्तम प्रबंधक है। उसकी प्रत्येक प्रबन्ध व्यवस्था बुद्धिपूर्वक है और प्राणियों के हित के लिए है। ऐसे उत्तम प्रबंधक को हम शत-शत नमन करते हैं।

इसी प्रकार गेहूँ, चावल, जौ, चना आदि पकने की व्यवस्था उससे अलग कर दी। यदि पपीते के पकने के साथ-साथ प्रतिदिन एक या दो दाने पकाता जो पहले पक जाता और वह अंतिम दाने पकने की प्रतीक्षा करता तो सम्भवत: सबसे पहले पकने वाला दाना या तो गिर कर धूल में मिल जाता या गल जाता। अंतिम पकने वाला दाना तो कच्चा रहा जाता। इसी प्रकार कुछ कच्चे कुछ पक्के दाने मिलते जिससे हम उनका उपयोग ठीक ढंग से न कर सकते। इसीलिए अन्नों के सारे दानों को एक साथ पकाया क्योंकि उनका उपयोग एक साथ ही होता है।

विचार करें कि हमें पानी को इकट्ठा रखने के लिए टंकी की आवश्यकता होती है। उस टंकी के पानी से हम अपने प्रत्येक कमरे में उस जल को ले जाते हैं। वहाँ से पानी हमारे घर में आता है। सोचें प्रभु के पास कितनी बड़ी टंकी होगी, कहाँ वह सम्भाल कर रखता होगा?

हमारी पानी की टंकी में यदि कीट-पतंग या कचरा गिर जाये तो हम टंकी को साफ कर देते हैं। अपनी टूटी खोलेंगे और वह गन्दा पानी धार के रूप में बहकर निकल जाएगा। भगवान भी चाहे तो धार के रूप में बना के धरती पर वर्षा कर सकता है। आप कल्पना करें यदि परमात्मा भी इसी प्रकार की मोटी-मोटी टूटियाँ खोल देता तो पूरी पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता। जीव-जन्तु नष्ट हो जाते, मकान, वृक्ष, मनुष्य सब नष्ट हो जाते। मुझे एक बार मसूरी में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमें मसूरी से कुछ दूरी पर एक झरना, जिसे 'कैम्पटी फॉल' कहते हैं, देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हमने सोचा हम भी स्नान कर लें। हम ज्यों ही कैम्पटी फॉल के झरने के नीचे खड़े हुए ऐसा लगता था जैसे तीव्र और भारी धारा के रूप में सिर पर पत्थर पड़ रहे हैं। यदि प्रभु भी इस प्रकार मोटी-मोटी पानी की धारें टूटियों से खोल देता तो हमारी क्या स्थिति होती, उसकी कल्पना करके हम काँप उठते हैं। परन्तु वह परमात्मा बहुत ही दयालु है, उत्तम प्रबन्धक है, वह जानता है कि मेरी इन सन्तानों में जितनी सहन करने की क्षमता है उतना ही जल बरसाता है, जितने की हमें आवश्यकता होती है, वह बूँद-बूँद बरसाता है ताकि हमें कोई कष्ट न हो, फुहारों के सदृश जल बरसाता है ताकि हमारे सिरों पर कोई चोट न लगे। वह भगवान कितना उत्तम प्रबंधक है! तभी तो वेद में कहा है- **''पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति''।**

उस परमात्मा के काव्य की सृष्टि को देखो जो सदा चिर-नवीन है। परमात्मा की व्यवस्था कितनी युक्तिसंगत है, उसका एक और उदाहरण देखिये। एक किसान अपनी पत्नी से कहने लगा कि प्रभु की प्रबन्ध व्यवस्था बुद्धिपूर्वक नहीं है। बड़े-बड़े पेड़ो पर छोटे-छोटे फल लगा रखे हैं और हमारे खेतों में जो बेलें उगी हैं उनमें बड़े-बड़े कददू और पेठे लगे हैं, इतनी कमजोर बेलों में इतने भारी-भारी फल लगाकर

प्रभु ने बुद्धिमता का परिचय नहीं दिया। उसकी पत्नी धर्मपारायणा थी। वह कहने लगी कि प्रभु की प्रबंध व्यवस्था इतनी पूर्ण है कि उसमें दोष नहीं है। इस प्रकार चर्चा करता हुआ वह किसान अपने खेत में चला गयां दिन भर काम किया, दोपहर को विश्राम करने के लिए एक आम के पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। इसी बीच हल्की-हल्की हवा चलने लगी, उस कृषक को नींद आ गई। तेज हवा के झोंको से एक पका हुआ आम संयोग से उस व्यकित की नाक पर आ गिरा। जैसे ही वह आम उसकी नाक पर आकर गिरा तो वह व्यक्ति झुंझला कर उठा, क्रोध में आग-बबूला हो रहा था, आँख से आँसू बह रहे थे। सोचा किसने मारा? इधर-उधर नजर दौड़ाई तो देखता है कि कुछ पत्ते गिरे हुए हैं, तेज हवा चली तो ऊपर से आम का यह फल गिरा है। यह देखकर वह एक बार ठिठका और कुछ सोचा, फिर रोते हुए प्रभु से कहने लगा कि 'प्रभु तेरी लीला अपरम्पार है'। तू बहुत उत्तम प्रबंधक है। मेरी सोच तो यह थी कि बड़े फलों को बड़े पेड़ों पर और छोटे फलों को छोटी बेलों पर लगाना चाहिए था। यदि इस आम के बड़े पेड़ पर आप कद्दू लगा देते तो आज मेरा क्या हाल होता? हे प्रभु! तू बड़ा न्यायकारी है। तूने अद्‌भुत रचना की है। बड़े पेड़ में छोटा फल और छोटी लताओं में बड़े फल लगाकर तूने उत्तम व्यवस्था की है। यह कहकर वह घर जाता है। पत्नी पूछती है कि 'क्या बात है किसी से झगड़ा करके आये हो, नाक फूला हुआ है?' कृषक ने कहा कि हे देवी! मैं तुम्हारी बात से सौ प्रतिशत सहमत हूँ कि प्रभु की प्रबन्ध व्यवस्था उत्तम है। उसने अपने साथ बीती घटना सुनाई ओर कहा कि परमात्मा के विषय में मेरी सोच गलत थी, मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ। इस परमपिता परमात्मा को शत-शत नमन करता हुआ मैं अपने और संसार के अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि 'हे परमात्मा! तूने इस विशाल ब्रह्माण्ड की रचना भी की है और फिर उसकी यथायोग्य व्यवस्था भी कर रहा है। तू सर्वोत्तम प्रबन्धक है।'

– 04/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, मो. 09911197073

जरूर करें सुबह का नाश्ता

आज की व्यस्ततम जीवनशैली में सुबह का नाश्ता छूटता जा रहा है। सुबह का नाश्ता हमारे शरीर को सबसे अधिक ऊर्जा प्रदान करता है परन्तु हम सुबह का नाश्ता जरूरी नहीं समझते क्योंकि हम ऑफिस, कॉलेज, स्कूल जाने की जल्दी में बिना नाश्ता किए ही चले जाते हैं। अतः आवश्यक है कि हम सुबह का नाश्ता करने की आदत डालें क्योंकि समय पर किया नाश्ता शरीर में उत्साह व ऊर्जा का संचार करता है। 1. सुबह के नाश्ते से शरीर और मन में स्फूर्ति का संचार होता है। 2. सुबह का नाश्ता आपके बढ़ते वजन को नियंत्रित रखता है। मुट्ठी भर ड्राई फ्रूट का सेवन भी सुबह के नाश्ते और स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बहुत उपयोगी है। 3. ताजे फलों का जूस लें। 4. प्रातः एंटी ऑक्सीडेंट युक्त पदार्थों का सेवन भी करें। 5. प्रातः दूध और छाछ का सेवन भी बहुत लाभदायक है। 6. उबले काले चने तथा अंकुरित दालों का सेवन भी पौष्टिकता प्रदान करता है। 7. सुबह का नाश्ता न करने से पाचन-क्रिया असंतुलित हो जाती है। 8. नाश्ता न करने से चेहरे पर उम्र का प्रभाव जल्दी दिखाई देने लगता है और दिन भर आलस रहता है तथा मूड़ खराब रहता है।

वर्ष 2015 का कलैन्डर

स्वामी दयानन्द का रंगीन चित्र, हिन्दी तिथि एवं पर्वो सहित
आर्ट पेपर पर सुन्दर आकर्षक छपाई
800/- रूपये प्रति सैकड़ा (1000 लेने पर समाज का नाम एवं पता, दूरभाष आदि की छपाई निःशुल्क की जाएगी।)

सम्पर्क सूत्रः मयंक प्रिन्टर्स

2199/64 नाई वाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाषः 09810580474, 011-41548503
E-mail: mayankprinters5@gmail.com

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

मनुष्य की सर्वोच्च उपाधि भगवान् है

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

आर्य समाजी जब राम और कृष्ण को भगवान कह कर सम्बोधित करता है तब मेरे पौराणिक भाई यह समझते हैं कि आर्य समाजी भी राम और कृष्ण को भगवान् मानते हैं यानि ईश्वर मानते हैं पर ऐसी बात नहीं है, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर आदि शंकराचार्य, दयानन्द आदि जिनमें पहले हम भगवान शब्द का प्रयोग श्रद्धा व सम्मान के साथ करते हैं, ये सब ईश्वर नहीं, महापुरुष थे। भगवान तो उनकी उपाधि या पदवी हैं जैसे महाशय, महात्मा, सन्त, ऋषि, महर्षि आदि होता है वैसे ही भगवान् भी एक उपाधि है। परन्तु भगवान, मनुष्य की सर्वोच्च व सर्वोपरि उपाधि है। जिसमें मानवता के अधिक से अधिक गुण विद्यमान हों, जो परम ऐश्वर्यशाली हो, जिसका पूरा जीवन निष्काम कर्म यानि अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि परोपकार के लिए बीता हो। जिसका खाना, पीना, सोना, बैठना आदि नित्य कर्म भी स्वार्थ की भावना से न होकर परमार्थ की भावना से हो। वह भोजन भी इस लिए करता है कि मैं अधिक से अधिक जीवित रहकर मानव की ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र की अधिक से अधिक सेवा कर सकूं। जिसका प्रत्येक श्वास और प्रत्येक पल भी परोपकार में लगा हुआ हो, अपने स्वार्थ के लिए। जो मन, वचन, कर्म से कोई भी गलत काम अपने स्वार्थ के लिए न किया हो, जो बुद्धि, बल, ज्ञान, साहस, धैर्य, निष्पक्षता, त्याग, तपस्या व चरित्रता में भी बेजोड़ हो, ऐसे महापुरुष को भगवान् कहा जाता है। यह पदवी किसी सरकार से या संस्था से नहीं मिलती, यह पदवी तो उसके प्रशंसक लोग ही श्रद्धा व प्रेम से देते हैं। मेरा विचार है कि अवतारवाद की अवधारणा और मूर्ति पूजा का प्रारम्भ भी इसी भगवान के प्रयोग से ही हुआ है। मनुष्य का यह स्वभाव होता है, उसके मन में जो विचार होते हैं, वे समय जाने पर स्वयं ही वास्तविकता में परिणित हो जाते हैं। जब लोगों ने राम और कृष्ण को भगवान् के नाम से सम्बोधित करते देखा तो बुद्ध स्वार्थी और कम पढ़े लिखे ब्राह्मणों ने सोचा कि राम और कृष्ण ईश्वर के अवतार हैं इसीलिए तो भगवान कहते हैं। वैसे महापुरुष तो बहुत हुए हैं, केवल राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार मान लिया और उनकी काल्पनिक मूर्तियां बनाकर पूजने व पूजवाने लगे और अपनी रोटी-रोजी का रास्ता बना लिया।

दूसरी बात यह भी है कि लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पहले, जब देश में बौद्धों और जैनियों का प्रभाव बढ़ गया और बढ़ता ही जा रहा था, इसके पीछे भी उनके द्वारा की जा रही मूर्ति पूजा भी एक कारण था। तब हिन्दू पण्डितों ने भी सोचा कि मूर्तिपूजा के कारण इनके अनुयायिओं की संख्या बढ़ रही है तो हमें भी अपने भगवान राम और कृष्ण की मूर्ति बना कर पूजा करनी चाहिए ताकि हमारे हिन्दू, बौद्ध और जैन न बने। इस समय वेद-ज्ञान प्रायः लुप्त हो चुका था। यज्ञों में पशु बलि होने लगी थी। ईश्वर की सही उपासना वैदिक सन्ध्या, अष्टांग योग को लोग भूल चुके थे। सही ज्ञान के बिना निराकर ईश्वर की उपासना करनी बड़ी कठिन है। ऐसी स्थिति में लोगों ने मूर्ति पूजा से ही ईश्वर की उपासना करना सरल, समस्या और हिन्दुओं में मूर्ति पूजा का प्रचलन हो गया। हमसे तत्कालीन लाभ तो यह हुआ कि हिन्दुओं का बौद्ध और जैन बनना कम हो गया। परन्तु भविष्य के लिए यह बड़ी दुःखदायी सिद्ध हुई।

मानव-मात्र का कल्याण करने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ उसने शिवरात्रि के दिन शिव की पिण्डी पर चूहों को उछलते-कूदते और प्रसाद खाते देखा तब दयानन्द जिसके जन्म का नाम मूल शंकर था, उसको मूर्ति की जड़ता का ज्ञान हो गया। इसके बाद उसने अपनी बहन और चाचा की मृत्यु देखी, तब उनको वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे बाईस वर्ष की आयु में घर छोड़कर चले गये। उसने पूरे देश का भ्रमण करके देश में फैले अज्ञान, अन्धविश्वास और पाखण्ड को अपनी आंखों से देखा/पण्डे-पुजारियों को धर्म के नाम पर अधर्म करते देखा, तो वे इसका निदान ढूढ़ने के लिए विचलित हो उठे। ईश्वर की कृपा से व भटकती मानवता के भाग्य से, किसी ने इनको व्याकरण के सूर्य गुरु बिरजानन्द के पास भेज दिया, जिसके ऊपर से चक्षु तो बन्द थे पर हृदय-पटल के चक्षु खुले थे। उस बिरजानन्द ने वेदों की शिक्षा जो मानव को मोक्ष तक पहुंचाने की सही शिक्षा है, देकर जिज्ञासु दयानन्द के ज्ञान चक्षु खोल दिये। दयानन्द, सद्गुरु बिरजानन्द के पास लगभग तीन साल विद्याध्ययन किया। इस बीच दयानन्द वेदों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया। विद्या समाप्त होने के बाद जब दयानन्द, गुरु, दक्षिणा के रूप में कुछ लौंग लेकर गुरु के पास गये, तो गुरु बिरजानन्द, दयानन्द के गले में गला डालकर रोने लगे और कहा दयानन्द। मैंने तुझे इस लौंग की दक्षिणा के लिए नहीं पढ़ाया था। तब दयानन्द बोले कि गुरु जी आपकी क्या इच्छा है, बता देवे? शिष्य अपना जीवन देकर भी आपकी इच्छा पूर्ण करेगा। तब गुरु बिरजानन्द बोले, दयानन्द! सब जगह अज्ञान, अन्ध विश्वास व पाखण्ड का बोल-बाला है, वेदों के लोग भूल चुके हैं और पण्डे-पुजारी अपने स्वार्थ के लिए अधर्म को धर्म बतलाकर भोली-भाली सहारा बन। तू बेटा! देश में वेदों के ज्ञान का प्रचार कर और लोगों को वेद-पथ पर लाकर, लोगों को मोक्ष पाने का जो सही वेद-मार्ग है वह बतला कर असहाय और भोली जनता का उद्धार कर। मैं दक्षिणा में तेरा जीवन चाहता हूँ। दयानन्द ने कहा, गुरु जी ऐसा ही होगा और गुरु जी के चरण छूकर वहाँ से निकल कर अपने कार्य-क्षेत्र में कूद पड़े।

दयानन्द बारह वर्षो तक देश के कोने-कोने में घूमे, वन और जंगलों को छाना, पहाड़ और घाटियों को लांघा, नदी और नालों को पार किया, भूखे-प्यासे यह कर अनेकों दुःखो व कष्टों को सहते हुए दयानन्द ने वेदों का प्रचार किया। मूर्ति पूजा, अवतारवाद, गंगा स्नान से पापों की निवृति, तीर्थ दर्शन से मुक्ति, फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत, गण्डे-डोरी, सगुन आप सगुन आदि अन्धविश्वासों का खण्डन, अपने उपदेशों भाषणों तथा शास्त्रार्थों द्वारा किया। अनेक ग्रन्थों को लिख कर वैदिक सिद्धान्तों से अवगत करवाया। इन कामों में महर्षि को विरोधियों द्वारा गाली खाई, ईटें-पत्थर खाये, जहर पीया, अपमान सहा। इन सब को सहते हुए इतना अधिक प्रयास करने के बाद देश में कुछ वेद-ज्ञान का प्रकाश हुआ और देश में कुछ नव-जागृति आई। इसके बाद स्वामी जी ने सन् 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना, इस उद्देश्य से की कि मेरे चले जाने के बाद आर्य समाज, वेद प्रचार द्वारा मेरे अधूरे कामों को पूरा करती रहेगी। स्वामी जी 30 अक्टूबर 1883 दीपावली के दिन अजमेर में मोक्ष गामी हो गये। उनकी मृत्यु के बाद आर्य समाज ने लगभग साठ वर्षो तक तो बहुत अधिक काम किया, जिसका प्रभाव

सरकार व जनता यह बहुत अधिक पड़ा परन्तु बाद में कुछ शिथिलता जरूर आ गई। फिर भी आर्य समाज वेद प्रचार, परोपकारी कार्य, विद्या प्रसारण तथा शुद्धि आदि कार्य काफी कर रही है। ईश्वर आर्यजनों को ऐसी शक्ति देता रहे जिससे वे महर्षि के कार्यो को आगे बढ़ाते रहें और महर्षि स्वप्नों को साकार करते रहें।

मेरा अन्य धर्मावलम्बियों से भी निवेदन है कि वे आर्य समाज से जुड़कर सत्य क्या है, असत्य क्या है, जड़ क्या है, चेतन क्या है, भगवान क्या है, ईश्वर क्या है तथा ईश्वर, जीव प्रकृति के भेद को जानें और वेद ज्ञान को प्राप्त करके अपने जीवन को वेदानुकूल चला कर यानि शुभकर्मों को करते हुए अष्टांग योग से यम-नियमों का पालन करते हुए समाधि तक पहुंच कर मोक्षगामी बने। यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है जिसको पाने के लिए ईश्वर जीव को धरती पर भेजता है। जीव मनुष्य योनि में ही आकर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। जो वेद-मार्ग पर चलने से ही मिलना सम्भव है। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है, जो वेद-मार्ग पर चलने की शिक्षा देती है, इसलिए मोक्ष प्राप्ति के लिए आर्य समाज से जुड़ना जरूरी है। अन्यथा जीव को आवागमन के चक्कर में ही घूमना पड़ेगा।

- 180, महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकत्ता-700007, फोन- 033- 22183825, 26758903

आर्ष कन्या गुरुकुल दधिया को सात्विक सहयोग

श्री सतपाल जी न्यू राजधानी एन्कलेव, नई दिल्ली जो कि एक प्रसिद्ध आर्य परिवार से सम्बन्धित है। आप बालकाल्य से ही वैदिक मान्यताओं से सुसंस्कारित है। आपको एक ऐसी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज जी का संयोग मिला जो कि स्वयं भी आर्य समाज के प्रति समर्पित माँ थी। उनके आकस्मात निधन पर श्री सतपाल जी ने मन में यह संकल्प किया कि किसी एक कन्या गुरुकुल जिसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं है और उनके पास एक सत्संग हॉल भी उपलब्ध नहीं है कि वे सहायता करेंगे।

इसी उपलक्ष्य में आर्ष कन्या गुरुकुल दधिया को अपनी पुण्य कमाई से अपनी धर्मपत्नी स्व. सरोज जी की स्मृति में सत्संग भवन हॉल का निर्माण करवाया। जिसके चित्र प्रकाशित किये जा रहे है। आर्ष कन्या गुरुकुल दधिया की सभी ब्रह्मचारिणियों की एवम् अधिकारी वर्ग की ओर से सात्विक आभार।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **5000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

नारी इतनी असुरक्षित क्यों?

❒ टंकारा श्री अरूणा सतीजा

नारी ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है। यह सुन्दर है कोमल है सौम्य है, धीर है सागर सी गम्भीर है सब से बढ़कर यह एक शक्ति है। ईश्वर कृति का सब से लेटस्ट मॉडल है। नयी चीज में उत्कृष्टता व नवीनता होती है जो सब को आकर्षित करती है। यह अधिक मूल्यवान एवं गुणवान भी होती है। इसी लिए महान कवियों ने पुरुष की अपेक्षा नारी से सम्बन्धित अधिक साहित्य की रचना की है। एक विद्वान ने नारी के गुण कर्म एवं स्वभाव के आधार पर सौ नामों से अधिक नामों का वर्णन किया है। सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी नारी की स्थिति मात्र वैदिक युग को छोड़ कर सदा से ही दयनीय एवं शोषित रही है। महाभारत के युद्ध में अनगिनत योद्धाओं के मारे जाने के कारण स्त्रियां विधवा हो गई। वह बेबस, बेसहारा और बेचारी हो गई। कुछ सामाजिक व धार्मिक कारणों के कारण न केवल भारत ही परन्तु समस्त विश्व पुरुष प्रधान हो गया। इस्लाम धर्म में तो नारी मात्र भोग की वस्तु समझी जाती थी। मध्य काल नारी जाति के लिए अति उत्पीड़न का काल था। बाल विवाह बाल विध वा बहुपत्नी विवाह तथा सामाजिक सकीर्णता के कारण घर परिवार में ही परिवार के पुरुषों द्वारा व्याभासार होता था। धन्य है नारी जाति सब कुछ सहा परन्तु अपने अस्तित्व को नहीं मिटने दिया।

19 शताब्दी में महर्षि देव दयानन्द पहली बार नारी जाति का मसीहा बन कर आया। पहले व्यक्ति थे जिन्होंने बालिकाओं की बिक्री पर रोक लगाई। नारी को शिक्षा प्राप्त करने तथा वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया ताकि वेद ज्ञान से नारी का आत्मिक बल तथा तेज इतना बढ़ जाए किसी पर पुरुष का छूना तो दूर की बात हो उसकी ओर किसी की आंखे करकर देखने की भी हिम्मत न हो यह था नारी सशक्तिकरण का पहला कदम और महर्षि का सपना।

बच्चों के भविष्य को सुन्दर बनाना, कोई एक दिन बात नहीं बल्कि वर्षो-वर्षो की साधना है। बच्चा पिता की अपेक्षा माँ के अधिक सम्पर्क में रहता है। आठ वर्षो तक बच्चों का उठना बैठना, सोच विचारधारा तथा बच्चे के चिंतन आदि को समचीज बनाना एक का नैतिक कर्त्तव्य है। क्यों कि आज का बच्चा ही तो कल का पुरुष है नागरिक है। इसीलिए सत्य है बच्चे का पालन पोषण किसी सन्त की तपस्या तथा मन्दिर की पूजा से कम नहीं। परन्तु यह पूजा व तपस्या घर-घर से मिटती जा रही जो सर्वनाश का प्रतीक है। बच्चों को तभी संस्कारवान बनाया जा सकता है। जब माँ बाप स्वयं संस्कारवान होंगे। बच्चों को वह सब देखने का कभी अवसर मत दो जिसे आप स्वयं करना या देखना नहीं चाहते।

समय सदा अपनी चाल चलता रहता है। विधाता को कुछ और मंजूर था। भारतीय वेदों की ओर न लौट कर पाश्चात्य सभ्यता की ओर मुड़ गये। भौतिक सुखों को प्रदान करने वाले नये-नये आविष्कारों ने हमारी युवा पीढ़ी को चकाचौंध कर दिया। इसी समय में सिनेमा का आविष्कार हुआ। इन कलाकारों की अदायों तथा इश्काने दृश्यों ने युवाओं के मस्तिष्क को विकृत करना शुरु कर दिया। इससे खुलापन बढ़ा, पुरुष नारी का भेद मिटा, वेशभूषा बदली शिक्षा प्रणाली, बदली, सहनशीलता का प्रचलन बढ़ा विचार बदले, बदल गई सारी भारतीय संस्कृति। नारी ने पुरुष के समान सभी ऊँचे-ऊँचे पदों पर अधिकार कर लिया। वह बन गई स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्र नारी। परिणाम स्वरूप नारी में से ईश्वर प्रदत एवं समाजकीय गुणों का लोप होता गया। संयुक्त परिवार टूटे जो बच्चे की प्रथम पाठशाला थी। रिश्ते टूटे संवेदनाएं व मर्यादाएं मिटी। मात्र रह गई स्वतन्त्र नारी। भौतिकता रंग लाई। घर में पैसा बढ़ा अति सुख में वह भूल गई अपने मुख्य कर्त्तव्य को लक्ष्य को जिसके लिए ईश्वर ने उसे इस धरती पर भेजा था। माता निर्माता भवति।''

अति सुखों में पले बच्चे संस्कार-विहीन होने लगे। अतः फूल शूल बन गये। नैतिकता खत्म हुई, चरित्र विहीन मात्र मांस के लोथड़े सम बच्चे अविद्या के घोर अन्धकार में खो गये। आज इसी अविद्या का परिणाम है कि आज नारी सब कुछ होते हुए भी घर-बारह कहीं भी सुरक्षित नहीं है। प्रातः उठते ही, प्रत्येक समाचार पत्र में तथा टी.वी. के प्रत्येक चैनल पर मुख्य समाचार होता है गैंग रेप, हत्या कई नये कठोर कानून बनाये गये, जनता ने इस के विरूद्ध प्रदर्शन कर रोष प्रगति किया कई जिसका घटनाएं व आगजनी हुई। परन्तु 'गैंगरेप'' की घटनाएं है कि रूकने का नाम नहीं ले रही है-क्यों, आपने दृष्टिकोण के आधार पर इन घटनाओं के मुख्य कारणों को प्रकाश में लाने का प्रयास कर रही हूँ। पहला एवं मुख्य कारण है, समाज को अधिकाश लोगों का संस्कार, विहीन होना, लड़के लड़कियों का अति खुला खुलापन, लड़के लड़कियों ने शादी से पूर्व आपसी सम्बन्ध व सिनेमा जो बाल कोमल मस्तिष्क को समय से पूर्व प्रौढ़ बना रहे हैं। माता-पिता की अति व्यस्तता, अति धनी होने के कारण बच्चों में अनुशासनहीनता, उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों के सामने नारी कर्मचारी की, विवशता, राईसजादों की बिगड़ी सन्तानें तथा कुछ अनपढ़, उदण्ड आवास, गुण्डे तथा समाज कटक आदि व कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं।

बड़े दुःख से लिखना पड़ रहा है कि प्रशासन ऐसे संवेदनशील मामलों में क्यों उदासीन है। बेबस है। कारण कुछ भी हो अपराध तो अपराध है। अपराधों को रोकने का एक मात्र इलाज है कठोर, तुरन्त तथा न्यायपूर्वक दण्ड व्यवस्था। डण्डा के भय से भूत भी भागता है। वसंत कुंज दिल्ली की दिल को दहला देने वाली दुर्घटना के अपराधी अभी तक विचाराधीन है। ऐसे मुकदमों पर तो बहस की आवश्यकता ही नहीं। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता। कुछ दरिन्दों की दरिन्दगी से जन मानस रो उठा परन्तु सरकार नहीं हिली। यही मुख्य कारण है कि अपराधी निडर हो कर अपराध कर रहे हैं। आज शायद ही कोई ऐसा विभाग या पद होगा जिस के दामन पर दाग न हो।

इसका यह अर्थ नहीं कि सागर में एक बूँद गन्दी मिलने से सारा सागर ही गन्दा हो गया। पुनः मैं अपने विचारों को दोहराते हुए लिख रही हूँ कि **'माता निर्माता भवति'** के भाव से प्रेरित हो कर प्रत्येक माँ इस गुरुत्व उदरदायित्व को अपने कन्धों पर धारण करते हुए स्वयं तो संस्कारवान हो ही अपने बच्चों को चाहे वह लड़की हो या लड़का संस्कारवान बना कर कुन्दन तुल्य अमूल्य बना दे। मानवीय गुणों से परिपूर्ण कर बच्चों को परिवार समाज व राष्ट्र को समर्पित कर अपने मृण से अमृण होकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रगति करते हुए कह सके तूने मुझे सुन्दर बनाया। मैंने तेरे संसार को सच्चे मानव से सुसज्जित कर दिया। हे ईश्वर तूने अपना कर्त्तव्य पूरा किया मैंने अपना फर्ज निभाया।

– म.न. 101, सौम्या इन्केलेब, ध्रूव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.), मो. 09460183873

आस्था के दलदल में

❒ राजेन्द्र प्र. आर्य

आज लोगों को जिस नाम पर सबसे ज्यादा ब्लेकमेल किया जाता है वो नाम है भगवान का और अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राय: सभी धर्माधिकारियों ने अपने-अपने धर्मालम्वियों को इस बात की सख्त हिदायत दे रखी है कि धर्म और ईश्वर के विषय में बुद्धि का प्रयोग सर्वथा वर्जित है, यह पूरी तरह से आस्था का विषय है। यही कारण है कि लोग ईश्वर के विषय में बताई गई तमाम बातें ठीक उसी तरह मान लेते हैं जिस प्रकार उन्हे बताया गया है और एक बार जब बिना जाने हुए सब मान लेते हैं तब फिर कुछ जानना भी नहीं चाहते। सिर्फ वैदिक धर्म में ही जिसका आधार वेद है में किसी बात को तर्क और प्रमाण की कसौटी पर कसकर बुद्धिमता पूर्वक विचार मानने का निर्देश है। यदि आस्था के नाम पर व्यक्ति को यह स्वतन्त्रता है कि वो जो माने तो आस्था के नाम पर ही ईश्वर को खुश करने वास्ते बलि और नरवलि देना गलत कैसे? इसे मात्र एक उदाहरण से समझा जा सकता है:-

इसे बहुत कम लोग जानते होंगे पर विज्ञान के अनुसार सूर्य का आकार पृथ्वी के आकार से 13 लाख गुणा बड़ा है अर्थात् 13 लाख पृथ्वी को मिलाकर एक सूर्य का आकार बनता है, और सूर्य की दूरी पृथ्वी से 9 करोड़ माइल दूर है, इतना ही नहीं सूर्य एक जलता हुआ आग का गोला है और सूर्य की उर्जा का मात्र 2 अरववाँ भाग ही पृथ्वी तक पहुँचता है, अगर सूर्य की सम्पूर्ण उर्जा पृथ्वी तक पहुँच जाय तो सबकुछ जलकर भस्म हो जाएगा। कुछ भी नहीं बचेगा। मगर इसी सूर्य के विषय में तुलसी दास ने लिख दिया कि सूर्य को हनुमान जी निगल गये। यह बात किसी के बुद्धि में समाहित नहीं हो सकता, फिर भी लोग इसे सत्य मानते इसलिए हैं कि रामचरित्र मानस के रचियिता और इतने बड़े रामभक्त भला गलत कैसे लिख सकते हैं। तो यह है अन्ध आस्था का प्रमाण।

अभी अभी साई पूजा को लेकर शंकरचार्य और साई भक्तों के बीच बहस छिड़ गई है जो कि एक ववंडर का रूप लेता जा रहा है हालांकि इसको कोई सार्थक परिणाम निकलने वाला नहीं है क्योंकि दोनों ही वेद विरूद्ध हैं, फिर भी हम चाहते हैं कि यह वहस किसी निर्णायक परिणति तक पहुँचे ताकि सत्य का अनावरण हो सके। शंकराचार्य का साई बाबा पर सबसे बड़ा आरोप यह है कि हिन्दू धर्म में मात्र 24 अवतारों का ही उल्लेख है तो फिर पच्चीसवां अवतार के रूप में साई बाबा कैसे? तो इस सम्बन्ध में हमारा यह कहना है कि हिन्दू धर्म के शास्त्रों में जब मात्र 24 अवतारों का ही उल्लेख है तो हम यह जानना चाहते है कि हिन्दू धर्म के किस शास्त्र में हिन्दू शब्द का उल्लेख है? तो हम यह जानना चाहते है कि हिन्दू धर्म के किस शास्त्र में हिन्दू शब्द का उल्लेख है? और अगर नहीं है तो हम हिन्दू क्यों है वो क्यों नहीं जिसके नाम पर इस देश का पुरातन नाम आर्यावर्त रहा है। शंकरचार्य का दूसरा आरोप है कि सार पूजा के नाम पर हिन्दू धर्म को वांटने का षडयंत्र है। तो इस सम्बन्ध में हमारा कहना है कि हिन्दू धर्म तो पहले ही से अनेको टुकड़ों में विभक्त है और जिस एक शब्द की वजह से हिन्दू धर्म अनेकों टुकड़ों में वटा हुआ है वो शब्द है अवतार। और जब तक यह शब्द अवतार विद्यमान रहेगा तब तक हिन्दुओं में एकता कभी भी स्थापित नहीं होगा और आगे भी अवतार होता रहेगा तथा हिन्दू बँटते रहेंगे। अनुयायियों की तो बात छोड़िए हमारे धर्माचार्य सब भी अनेक टुकड़े में बंटे हुए हैं।

आज ही टी.बी पर धमाचार्यो की जो बड़ी वहस देखने को मिल रहा है, उससे भी पता चलता है कि धर्माचार्यों में भी कितना विघटन है, इसे देखकर यह आश्चर्य होता है किसी भी धर्माचार्य को ईश्वरीय ज्ञान वेद से पूछने की जरूरत नहीं है कि आखिर वेद क्या कहता है जिसे मनुस्मृति ने लिखा है ''वेदोंऽखिले धर्म मूलम्'' अर्थात् वेद ही धर्म का मूल है तो थोड़ा वेद से पूछकर देखें कि ईश्वर कौन है? उसके क्या सब गुण है और वह क्या करता है। तो वेद के अनुसार:-

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। 2. ईश्वर सच्चिादानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्याययकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वेश्वर, सर्वव्यापाक, सर्वाअर्न्तयामी, अजर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है तो ये सब ईश्वर के गुणा है इसीलिए एकमात्र उसी की उपासना करनी चाहिए। 3. ईश्वर चूंकि अजन्मा है इसलिए मरण भी नहीं होता है। 8 अरब 32 करोड़ वर्ष का सृष्टि काल होता है इतना ही प्रलय काल होता है तो ईश्वर वो है जो सृष्टिकाल के पहले भी विद्यमान था और प्रलयकाल के बाद भी विद्यमान रहेगा। अवतार तो हम सभी का होता है, ईश्वर का नहीं। वह आने जाने वालों में नहीं है क्योंकि वह तो कर्मकाल दाता है, कर्मफल भोक्ता नहीं। ईश्वर जीवन और प्रकृति ये तीन अनादि सत्तायें है। अवतार महान आत्माओं का होता है, दिव्य आत्माओं का होता है परम आत्मा का नहीं।

ईश्वर कभी मरता नहीं, क्यों लेवे अवतार!
जीव शरीर धारण करें, अपने कर्मानुसार॥

दुर्भाग्य है हिन्दू समाज का जिसने वेदों को लाल कपड़े में बांध कर रख दिया है और सिर्फ नाम भर लेते हैं। हमारे धर्माचार्य भी वेदों से इतना दूर क्यों है? इसके दो कारण है प्रथम तो यह कि वेदों तक उनकी पहुँच नहीं है और दूसरा यह है कि अगर वेदों तक उनकी पहुँच भी है तो उनमें वेदों के पन्ने को पलटने का साहस नहीं क्योंकि इसके बाद ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, आडम्बर एवं अन्धविश्वास को फैलाया नहीं जा सकता, उनका धर्म का व्यापार ही ठप पड़ जायेगा। वेदों के इस मन्त्र का किसी के पास क्या जवाब है-न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महघश: अर्थात् ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं हो सकता क्योंकि उस महान यश वाले ईश्वर का कोई आकार नहीं है। इसलिए इन धर्मा चार्यो का बहस ही निराधार एवं वेद विरूद्ध है।

नि:संदेह साईबाबा एक उच्च कोटि के साधक थे जो सच्चे अर्थो में ईश्वर के भक्त थे। उनका कहना था कि सबका मालिक एक है तो क्या यह उन्होंने अपने बारे में कहा था, तो उनके भक्तजन उनकी भक्ति में क्यों नहीं लगते जिनके बारे में उन्होंने कहा था हालांकि यह कोई नई बात नहीं, वेद ने भी बहुत पहले ही कहा है कि ''एको विश्वस्य भुवनस्य राजा'' अर्थात् सम्पूर्ण भूमंडल का स्वामी एक है। तो साई बाबा के पहले भी ईश्वर था और साई बाबा के बाद भी ईश्वर रहेगा। अत: उनकी उपासना में सब लगे।

(शेष पृष्ठ 18 पर)

Vedic Sermons

BOOK REVIEWS

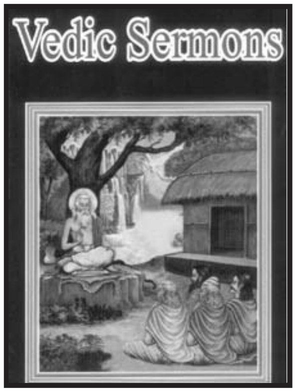

The Ved are foundation of Vedic culture. The word Ved derives from Sanskrit root vidalr which menas knowledge. The Ved is in four volumes. The names are Rg Veda, Sam Ved, Yajur Ved and Athary Ved. The meaning of RG is peoty, Sam means music, Yajur means prose and Athrav means miscellaneous. The teachings of the Ved are universal for all times. They reveal the message of humanity. The teachings of the Ved are full of inspiration to manking. They teach about the development of an individual, the welfare of society and how to maintain world peace.

Krishan Chopra

There are 20,358 mantras (Hymns) in the four Ved. They are Rg Ved 10522, Yajur Ved 1984] Sam Ved 1875, Athrav Ved 5977. Ved are the eternal worlds of God revealed at the dawn of creation. This books is written with a special purpose so that readers can have some idea about the Vedas by going through this bood. This is the selection of famous mantras from four Ved. There are Suktas (Chapters) written in the Ved giving detailed description of a particular subject. In this book only one mantra is taken from the Sukta to give a glimpse to the readers. There are cross references from other scriptures which demostrate that the same theme that has been taken from the Ved is to be found in other scriptures as well. In the modern era Mahrisi Dayanand brought the Vedas to the frorefront. He invented this menthod of explanation to popularize the study of the Ved. I am confident that this book written by Krishan Chopra, Presently in U.K. will provide a glimpse of the Vedas to the readers. Available at: ***Shri Ghoodmal Prahlad Kumar Arya Dharmartha Nyas, Abhyudaya Bhavan, Agrasen Girls College Road, Station Road, Hindaun City (Raj.)-322230, Mobile 09414034072, 09887452959***

OM is the symbol of GOD

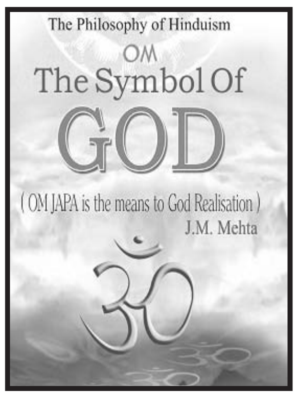

OM is the symbol of GOD, the creator of all universe. This sacred symbol can be depicted in writing in different ways. This is a shorthand representation of the sacred, beautiful and unique one lettered symbol to represent the must glorious name of the SUPREME BEING.

In this small book, an attempt has been made to describe briefly, various aspects of OM. These inter-alia include its meanings, the origin, its common usage and description in various Holy Scriptures and its linkage with other faiths etc. Some methods of meditation and OM JAPA are also stated. In part II of this book, famous OM mantras, with their meaning, have also been mentioned. Several OM songs (HKTU) have also been included for the benefit of the general reader. It is hoped that the readers will appreciate the sincere efforts made in the compilation of this small volume which should attract the attention of all God-loving people.

Children`s Quest

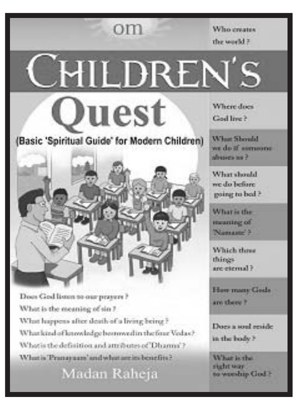

Children accept the beliefs what we teach them in their childhood and they follow the same beliefs life long. It`s our very important and prime duty to teach them properly about our Indian culture and ancient religious beliefs. Now a days children are so smart and clever that sometimes they ask such complicated religious question that even their parent cannot satisfy them with appropriate answers because they themselves do not know the proper answers. Religious teachings does have an explanation about the emptiness one feels inside him/her which school & university educations doesn`t fulfill. This helps us making our lives successful, worthy and useful.

The Essence of Satyarth Prakash

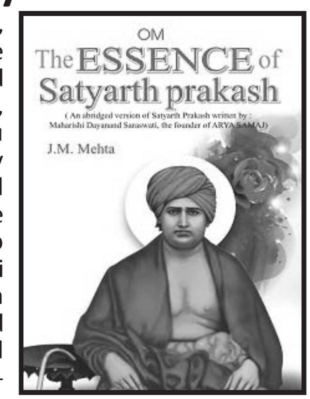

When you have the vision of Truth, doubts evaporate and question recede into silence. Truth alone shines and knowledge is pure awareness. However, when you emerge from the vision you feel-specially when you are socially committed and absolutely dedicated you must speak and find a language simple, clear and forthright, honest to the Truth and nothing else. Swami Dayanand had a vision of Truth through the Vedas. He was socially committed to humanity and absolutely dedicated to the Truth of existence and the meaning of life. He communicated his experience through Satyarth Prakash. This work can be treated as a comprehensive introduction. It is suggested that after the reading of this work, the conscientious reader should go to the original work of Swamiji for full benefit and appreciation of the light brought out by him from the Vedas and the later scriptures. Nevertheless, if the reader is hard-pressed for time and can feel content with knowing what Satyarth Prakash is like, this work would serve the purpose. ***All three books available at Govindram Hasanand, 4408, Nai Sarak, Delhi-11006***

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक संस्कृति का संवाहक

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया

यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अत: आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

गुरुकुल की विशेषताएं- ❑ कक्षा 6 से 9 तक तथा 11वीं व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ। ❑ महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त।

सम्पर्क करें- आचार्या प्रेम लता, फोन-01495-270503, मो. 09416747308, **संयोजक- श्रीमती अरूणा सतीजा,** दूरभाष: 0141-2623732, मो. 09460183872

चमत्कार का मोल

❒ अभय बजाज

टेस अपने बेडरूप में गई और अल्मारी में छुपाए हुए छोटे से डिब्बे को बाहर निकाल लाई। उस में रखी चिल्लर उसने फर्श पर उड़ेल दी और सिक्कों को सावधानीपूर्वक गिना-एक बार, दो बार, तीन बार, जोड़ बिल्कुल सही होना ही चाहिए। वह होठो ही होठो में बुदबुदाई।

सिक्कों को डिब्बे में वापस डाल कर और डिब्बे का ढक्कन ठीक से बंद करके वह पीछे के दरवाजे से बाहर निकली और 2 गलियां पार कर मेन मार्केट में दवाइयो की दुकान पर जा पहुंची।

वह धैर्यपूर्वक इन्तजार करती रही कि कैमिस्ट उस की ओर ध्यान दे, किन्तु वह उस समय कुछ अधिक ही व्यस्त था, उस बच्ची टेस ने अपने जूतों को फर्श पर रगड़ कर आवाज भी की मगर कोई फायदा नहीं हुआ। उस ने खांसा भी मगर बेकार, तब उस ने अपने डिब्बे से एक सिक्का निकाल कर दुकान के शीशे के काऊंटर पर पटका, यह तरकीब काम कर गई।

कैमिस्ट ने नाराजगी से पूछा, ''क्या चाहिए तुम्हें? और बिना जवाब का इंतजार किए बोला, ''देख नहीं रही हो कि मैं शिकागो से आए अपने भाई से बात कर रहा हूं जिससे मैं एक अर्से के बाद मिला हूँ।'' ''मैं भी आप से अपने भाई के बारे में बात करना चाहती हूं, वह बहुत ज्यादा बीमार है...... और मैं उस के लिए एक चमत्कार आई हूँ, टेस ने भी उतनी जी नाराजगी से कहा, ''क्या कहा तुम ने?'' दवासाज ने पूछा। ''उस का नाम एंड्रियू है, उसके सिर के अंदर कुछ ट्यू.... ट्यूमर या पता नहीं क्या है और मेरे डैडी कहते हैं कि अब उसे कोई चमत्कार ही बचा सकता है, कितने में आएगा यह चमत्कार?''

''बेटी, हम यहां चमत्कार नहीं बेचते, मुझे खेद है किन्तु मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता,'' कैमिस्ट कुछ नर्म पड़ते हुए बोला।

''सुनिए, मैं पैसे लाई हूं, अगर यह काफी न हो तो मैं और भी ले आऊंगी बस मुझे इतना बताइए कि चमत्कार कितने का आएगा'' कैमिस्ट का भाई जो एक बड़ा डाक्टर था नीचे झुका और उस ने छोटी बच्ची से पूछा, ''तुम्हारे भाई को कैसा चमत्कार चाहिए?''

टेस की आंखें भर आई। उस ने जवाब दिया, ''वह मुझे नहीं मालूम, मुझे बस इतना पता है कि वह बहुत बीमार है, मम्मी कहती है कि उसका आपरेशन होना है, मगर मेरे डैडी उस का खर्च नहीं उठा सकते, इसीलिए मैं अपने पैसे ले आई हूं।''

''कितने पैसे हैं तुम्हारे पास?'' शिकागो से आए सज्जन ने पूछा। एक डालर और ग्यारह सैंट, टेस ने धीमे से बताया। यही कुल रकम है जो मेरे पास है, लेकिन अगर जरूरत हो तो मैं कुछ और भी ले आऊंगी।''

''अरे वाह, कैसा संयोग है,'' उन्हों ने मुस्करा कर कहा, ''एक डालर और ग्यारह सैंट, यही बिल्कुल सही मोल है उस चमत्कार का जो छोटे भाइयों के लिए चाहिए।''

वह सज्जन थे डॉ. कार्ल्टन आर्मस्ट्रांग, न्यूरोसर्जरी के विशेषज्ञ, आपरेशन हो गया बिना किसी खर्च के और जल्दी ही एंड्रियू घर आ गया बिल्कुल स्वस्थ हो कर।

मम्मी और डैडी बैठे इस सारे घटनाक्रम की प्रसन्नतापूर्वक चर्चा कर रहे थे जिसने उन्हें यहां तक पहुंचाया था। मम्मी ने फुसफुसा कर कहा, ''वह सर्जरी वाकई एक चमत्कार था। न जाने उस पर कितना खर्च आया होगा।''

टेस मुस्कराई, उसे मालुम था कि एक चमत्कार का ठीक-ठीक मोल कितना है। एक डालर और ग्यारह सैंट साथ ही आस्था और विश्वास एक बच्चे का।

- संस्कार, पवन विला-11, 249/1, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, मध्य प्रदेश, फोन-0761-2424196, मो. 9926540040

इंसानियत से बढ़कर

❒ मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'

बिना किये अच्छे कर्म, किसी मनुज का उद्धार नहीं होता
हिन्दू हो या मुस्लिम इंसानियत से बढ़कर कोई कौम नहीं होता
जब तक इंसान को इंसान का प्यार नहीं मिलता
तब तक किसी व्रत-रोजे का पुण्य नहीं मिलता।
छेड़कर खूनी जिहाद को, कोई जन्नत नहीं जाता
चढ़ाकर मासूमों की बली, कोई सुख-चैन से नहीं जीता
मिटा दो उस कौमी धर्म को, जो हैवानियत फैलाता
जला दो उस दीपक को, जो चहुँदिशि प्रेम प्रकाश फैलाता।

- ग्राम रिहावली, फतेहाबाद, आगरा (उत्तर प्रदेश), मो. 9627912535

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

सरल सुगम

❐ ओमप्रकाश बजाज

चिन्तक विचारक कवि बुल्लेह शाह ने कहा था:-

''मिट्ठा बोलण, न्यूं चलण, हत्थुं वी कुझ डेवण
रब तिनां दी बुकलीं, जंगल क्यूं ढुंढैण?''

मतलब साफ स्पष्ट है कि मीठा बोलने वाले, झुक कर चलने वाले और अपने हाथ से कुछ देने वाले के तो ईश्वर अगल बगल रहता है, उसे ढूंढने के लिए जंगल में जाने की क्या जरूरत। कितना सरल, कितना सुगम उपाय। ऐसा उपाय उस समय में बुल्लेह शाह जैसे जन जन के लोकगायक कवि ही सुझा सकते थे।

खेद की बात है कि इन तीनों बातों से ही हम धीरे-धीरे दूर होते जा रहे हैं, मीठा बोल सुनने को आज हम तरस तरस जाते हैं, बाहर वालों की बात छोड़े हमारे अपने भी दो मीठे बोल बोलने में कंजूसी कर जाते हैं, जरा अपने ही घर का किसी भी एक दिन का परिदृश्य याद कर लीजिए, पत्नि है तो जैसे झुंझलाई सी रहती है। बच्चों का तो तौर तरीका बदल ही गया है। काम से थके हारे लौटने पर एक मीठे बोल की भी आशा करना अब कठिन होता जा रहा है। हर एक के पास इसके लिए अपना अपना कारण हो सकता है मगर वह ''होम स्वीट होम'' की परिकल्पना अवश्य गायब हो रही है। बाहर वालों के साथ हमारा हर वार्तालाप अब मात्र मतलब पर आधारित रह गया है। मतलब हो तो गधे को भी बाप कहने में हमें कोई दरेग नहीं वरना तू कौन और मैं कौन! किसी सरकारी दफतर में किसी कर्मचारी से जरा बात करने का प्रयास तो कीजिए, मेरा मतलब साफ हो जाएगा। भगवान करे रोड रेज से आपका वास्ता न ही पड़ा हो, कत्ल होते देर नहीं लगती, क्रोध को बहुत बड़ा अवगुण माना गया है किन्तु आज तो गुस्सा सब की नाक की नोक पर धरा रहता है। मीठा बोलने का रिवाज ही जैसे खत्म हो गया हो, अपने बचपन के दिन याद आते हैं तो एक हूक सी उठती है, क्या जमाना था वह भी ऐसा लगता था जैसे सब अपने है, आते जाते का अभिवादन सर्वमान्य रिवाज था चाहे जान पहचान न भी हो, अच्छे आचरण की शिक्षा बच्चों को मां के दूध के साथ ही मिलती थी।

झुक कर चलने की भली कही! आज तो 80 के चपेटे में पहुंचे बुजुर्ग भी कमर अकड़ा कर जैसे तैसे सीधे चलने की कोशिश में रहते हैं, ''ह्यूमिलिटी'' विनम्रता शब्द अब केवल शब्दकोश में ही ढूंढने से मिलेगा। व्यवहारिक जीवन में उसका कहीं कोई स्थान नहीं बचा। हर एक की अपनी अकड़ है, अपना अहं है, कोई अपने को किसी से कम नहीं मानता, गुरु शिष्य सम्बधों की ही मिसाल ले लीजिए, पुत्र खुले आम मां-बाप से पूछता है कि आप ने मेरे लिए किया ही क्या है। समाज में बदलाव आया है, बदलाव आना स्वाभाविक है, किन्तु अधिकांश बदलाव नकारात्मक परिणाम ले कर आया है, दु:ख इस बात का भी है कि आज नेता बनने हेतु तो मारधाड़ मची है मगर सामाजिक चेतना लाने हेतु कोई आगे आने को तैयार नहीं।

हाथा से कुछ देने अर्थात् दान का महत्व हर धर्म ने बतलाया है, दान देना हमारे सामाजिक ही नहीं व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन का प्रमुख अंग रहा है, दान भी वह कि बाएं हाथ को पता न चले कि दाएं हाथ ने कुछ दिया है, कहीं-कहीं तो इसे आवश्यक भी बना दिया गया था। अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार हर व्यक्ति किसी न किसी बहाने कुछ न कुछ दान स्वरूप देता ही था। महिलाएं इस काम में सदा आगे आगे रहती आई हैं, आज इस सोच में भी बदलाव आया है, लोग दान आज भी देते हैं मगर दान की पवित्र भावना से कम और दिखावे के लिए अधिक समय की बलिहारी वक्त जो न करा दे, जो परिवर्तन न ले आए, वही कम है! सो बुल्लेह शाह जी के सरल सुगह उपायों से तो हम दूर, बहुत निकल आए, अब भगवान को ढूंढने और पाने के मॉडर्न उपायों को अपनाने का जमाना है जिस के लिए उपाय सुझाने वाले भी वर्तमान युग के संत महात्मा अपना अपना अड्डा सजाए उपलब्ध है। यद्यपि वास्तविकता यह भी है कि आज आम आदमी का धर्म के प्रति आकर्षण कुछ बढ़ा हुआ ही देखने में आने लगा है चाहे धार्मिक सभाओं सम्मेलनों में जुटी भीड़ को देखें या धार्मिक टीवी चैनलों पर नजर आने वालों को, इसका कारण शायद आज के जीवन का नित बढ़ता टैंशन भी हो सकता है जिस की चपेट में आज हर वर्ग का, हर स्तर का हर सोच का इन्सान आया हुआ है, या फिर भेड़चाल! आज हर आदमी हर काम देखादेखी में करने का आदी जो होता जा रहा है, इन्स्टैंट काफी की ही तरह इन्स्टैंट लाभ वाले तथाकथित अभिमंत्रित ''यन्त्रों'' का धंधा भी अदन दूनी रात चौगनी तरक्की कर रहा है, रंग हैं जमाने के।

- बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, म.प्र.

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

કુલક્ષય અને કુલધર્મ

રમેશ મહેતા મો. ૦૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯ / Email:- pt.rammehta@gmail.com

કુલક્ષય અને કુલધર્મ

સામાન્ય રીતે હિન્દૂસમાજમાં શ્રાદ્ધ કરવાના મુખ્ય કારણોમાં કુલક્ષય ન થાય અને કુલધર્મનું પાલન થતું રહે તે માટેના તર્ક કથિત વિદ્વાનો તરફથી આપવામાં આવે છે. ત્યારે આવો જોઈએ શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતામાં શ્રી કૃષ્ણે વાસ્તવમાં કુલક્ષય અને કુલધર્મ કોને કહ્યા છે -

મહાભારતના યુદ્ધમાં પહેલા અધ્યાયમાં અર્જુનનો વિષાદ પોતાના સમ્બન્ધિઓની હત્યાને કારણે જ નહોતો સાથે સાથે પોતાના કૂળના સનાતન ધર્મનો નાશ થઈ જશે એવા ભયને કારણે પણ એ દુઃખી હતો. એને દેખાતું હતું કે કુળના બધાં જ સદસ્યો લડવા-મરવા માટે યુદ્ધભૂમિ પર આવીને ઊભા છે, એ પણ દેખાઈ રહ્યું હતું કે એમનામાંથી કોઈના જ બચવાની આશા નથી. આખાય પરિવારનો નાશ થવા જઈ રહ્યો છે. એટલે જ એમે કૃષ્ણને કહ્યું - कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः (૧-૪૦) કુળધ્મનો નાશ થવાથી સમ્પૂર્ણ કુલ પાપથી દબાઈ જશે.

આ એક ગમ્ભીર વિષય હતો. કોઈ વ્યક્તિના મરી જવાથી કે અપંગ થઈ જવાની અપેક્ષાએ એ ભય કે કુળધર્મ જ નાશ પામશે - વધારે ચિન્તાનો વિષય છે.

કેટલાક લોકો શ્રી કૃષ્ણ પર આરોપ લગાવે છે કે મહાભારતના યુદ્ધમાં એમની જ ભૂમિકા પ્રધાન હતી. જો શ્રી કૃષ્ણ પાંડવોને અને એમાંય અર્જુનને યુદ્ધ માટે ઉત્સાહિત ન કરત તો યુદ્ધ થાત જ નહીં અને યુદ્ધને કારણે દેશ અને જાતિનું જે પતન થયું છે તે ન થાત.

કૃષ્ણના કાર્યનો બચાવ કરનારાઓ કૃષ્ણને પરમાત્માનો અવતાર કહીને ભૂલ કરનારાઓથી ઉપર કહે છે. એમનું કહેવું છે કે પતન તો અવશ્યમ્ભાવી હતું. કળિયુગમાં મન અને શરીરનો હ્રાસ તો થવાનો જ હતો, એટલે જે કંઈ બન્યું છે તે તો થવા કાળ જ હતું.

બુદ્ધિશીલો આનો સ્વીકાર નથી કરી શકતા. જો આમ બનવાનું જ હતું તો પછી યુદ્ધ શા માટે? જો માની પણ લઈયે કે હ્રાસ અને પતન તો થવાના જ હતા, તો પ્રશ્ન એ છે કે યુદ્ધને કારણે એમાં મદદ મળી કે વિઘ્નો આવ્યા?

જોવા જઈએ તો કૃષ્ણે પણ વિનાશ થવાની સંભાવનાનો અસ્વીકાર તો નથી જ કર્યો. પણ સાથે સાથે યુદ્ધથી પતન થશે, ધર્મનો ક્ષય થશે એવું પણ નથી માન્યું. કૃષ્ણ અને મહર્ષિ વ્યાસ - બંનેનું માનવું હતું કે યુદ્ધ ભયંકર થશે. એનું કારણ વિદ્વાનો, શૂરવીરો અને આચાર્યો વિગેરે પોતાના આચરણ અને વચનથી અધર્મનું પાલન કરી રહ્યા છે —એ છે. જન-સાધારણ તો વિદ્વાનોનું અનુકરણ કરવાવાળા હોય છે. જ્યારે આચાર્યગણ અને નેતાઓ જ અધર્મના સહાયક બની ગયા હોય તો ધર્મનો હ્રાસ વધારે તીવ્ર ગતિથી થશે. આ વિદ્વાનો, શૂરવીરો અને આચાર્યોને નિઃશેષ કરવાથી હ્રાસની ગતિ મંદ પડશે.

નિર્વિવાદ સત્ય છે કે કોઈપણ જાતિનું ઉત્થાન અથવા પતન જાતિના નેતાઓના પતન અથવા ઉત્થાનથી આરમ્ભાય છે. એ ક્યારેય જાતિઓના ઉત્થાન અથવા પતનથી નથી આરમ્ભાતું. નેતાઓથી પણ વધીને જાતિના વિચારકો અને લેખકોના વ્યવહારથી જાતિ ઉન્નતિ અથવા તો અવનતિને પ્રાપ્ત થાય છે.

કહેવાનો અભિપ્રાય કે જાતિઓનું પતન અથવા ઉત્થાન યુદ્ધને કારણે નથી થતું. એ તો નેતાઓના પતન અને નેતાઓનું નિર્માણ કરવાવાળી શિક્ષા પ્રણાલી અને સાહિત્યથી થાય છે. ઇતિહાસના અધ્યયનથી એ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે હિન્દૂ જાતિનું પતન એટલા માટે નથી થયું કે દ્રોણાચાર્ય, ભીષ્મ પિતામહ અને કર્ણ આદિ લોકો યુદ્ધમાં માર્યા ગયા હતા. અપિતું પતન એટલા માટે થયું હતું કે મહાભારતકાળના સમય પહેલા અને પછીથી એવા સાહિત્ય અને વાતાવરણનું નિર્માણ થઈ રહ્યું હતું કે જે દુર્યોધન, ભીષ્મ, કર્ણ, દ્રોણ, અશ્વત્થામા આદિ લોકોને મહાપુરુષ ઘોષિત કરી રહ્યા હતા. અથવા જેણે અર્જુનના મનમાં એવી મિથ્યા ધારણા ઉત્પન્ન કરી દીધી હતી કે એ કુળધર્મ કે જે દુર્યોધન, ધૃતરાષ્ટ્ર, ભીષ્મ અને એમના પણ પૂર્વજ શન્તનુ, દુષ્યન્ત ઇત્યાદિએ અપનાવ્યો હતો, જાળવી રાખવા યોગ્ય છે.

મુખ્યરૂપે દોષ એ નેતૈઓનો હતો જેમણે દ્રોણાદિને આચાર્યની પદવી આપી હતી. આ કહેવાતા આચાર્યોને પશ્રય આપનારને ધર્મ ન કહી શકાય, કે તેઓને કુળધર્મના રક્ષક પણ ન માની શકાય.

એ કુળ નાશ પામ્યું, કુળ-ધર્મ નાશ પામ્યો, અને દેશના નવ -નિર્માણનો પ્રારમ્ભ થયો. પરંતુ દુર્ભાગ્યે દેશમાં વૈદિક આદર્શ-યુક્ત વર્ણાશ્રમની સ્થાપના ન થઈ શકી.

કહેવાય છે કે યુદ્ધમાં ક્ષત્રિય કૂળની અસીમ ક્ષતિ થવાને કારણે વર્ણસંકર સન્તાન ઉત્પન્ન થયા. તેઓ અશુદ્ધ આચાર-વ્યવહાર અને અશુદ્ધ સંસ્કૃતિને જન્મ આપનારા બની ગયા. આ ઠીક છે પરંતુ આ સમસ્ાનું એ રીતે સમાધાન ન થઈ શક્યું, જેવી રીતે પરશુરામ દ્વારા ક્ષત્રિય વંશના નાશ કરી દીધા પછી બ્રાહ્મણ વર્ગે કર્યું હતું. એ સમયે ક્ષત્રિય વિધવા પત્નિઓ દ્વારા બ્રાહ્મણોએ સન્તાને જન્મ આપીને વર્ણસંકરની ઉત્પત્તિ જ નહોતી થવા દીધી. મહાભારતના યુદ્ધ સમયે બ્રાહ્મણવર્ગમાં એવી યોગ્યતા નહોતી રહી કે તે ક્ષત્રિય વંશને પ્રેરણા આપી શકે. તત્કાલીન વિદ્વાન ઋષિ - મહર્ષિઓ આવી સલાહ પણ નહોતા આપી શક્યા.. બ્રાહ્મણ વર્ગમાં કેટલાક એવા લોકો ઉત્પન્ન થઈ ગયા હતા કે જેઓ ધનના લોભમાં યોગ્ય કાર્ય કરવાથી વિરક્ત થઈ ગયા હતા.

સંક્ષિપ્તમાં યુદ્ધથી નૈતિક પતન નહોતું થયું. નૈતિક પતનનો આરમ્ભ તો પહેલા જ થઈ ચુક્યો હતો. યુદ્ધ પછી આ પતનને રોકી તો દેવાયું પણ જે થઈ ગયું હતું તેને પાછું ન વાળી શકાયું. એનું મુખ્ય કારણ બ્રાહ્મણોનું પતન હતું.

લાગે છે કે વૈદિક મર્યા પ્રમાણે લોક અને પરલોક વચ્ચેનું સન્તુલન ટૂટી ગયું હતું. એ સમયે મોક્ષ પ્રાપ્તિના પ્રયાસને આ લોકના નિયત કર્મો કરતા શ્રેષ્ઠ માનવામાં આવ્યા હતા. મહાભારતના સમયમાં એવી માન્યતા પણ સ્થાપિત થઈ હતી કે વર્ણ-આશ્રમના કર્તવ્યોને છોડીને મોક્ષ પ્રાપ્તિ મહત્ત્વની છે. એટલે જ શ્રી કૃષ્ણને ગીતામાં આનું ખંડન કરવું પડ્યું હતું.

યુદ્ધભૂમિ પર પહોંચીને અર્જુનનું યુદ્ધ કરવાથી વિરક્ત થવું એજ સિદ્ધ કરે છે કે એ સમયે સાંસારિક ધર્મ-યુક્ત કર્તવ્યોને પણ છોડવાનો વિચાર વિદ્યમાન હતો જે પરલોક સુધારવા માટનો મનાતો હતો.

શ્રી કૃષ્ણે આ વાતનું ખંડન કરીને સ્થળે સ્થળે કહ્યું છે કે પોત-પોતાના ધર્મનું પાલન કરવું આવશ્યક છે. એના વિના મોક્ષ પણ પ્રાપ્ત નહીં થાય. કર્મનો ત્યાગ ક્યારેય થઈ જ ન શકે. નિષ્કર્મતા કર્મ ન કરવાને ન કહેવાય, નિષ્કામ મનથી કર્મ કરતા કરતા જ મોક્ષ-પ્રાપ્તિ તરફ આગળ વધી શકાય.

ગીતામાં વારંવાર એ વાત પર ભાર મૂકવો કે **सर्व कर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणः** એ સિદ્ધ કરે છે કે એ સમયે પણ એ ભાવના ઘર કરી ગઈ હતી કે કર્મનો ત્યાગ કરીને સંન્યાસ લેવો જીવનનો ઉદ્દેશ્ય છે.

આવી ભાવના તત્કાલીન અધ્યાપકો, ગ્રન્થકારોએ ફેલાવી હતી. એટલે જ્યા અધર્માચરણ કરવાની હઠ પકડીને બેઠેલાઓ યુદ્ધમાં માર્યા ગયા, ત્યાં આ મિથ્યા સાહિત્યની વિવેચના કરનારાઓને બદલી ન શકાયા.

મહાભારતકાળમાં અધર્મની વ્યાપક પ્રવૃત્તિનું કારણ આજ વાત હતી અને આ પ્રવૃત્તિએ ભારતના ઉત્તરકાળના યુગમાં પણ વધારો જ કર્યો છે. જ્યારે જ્યારે ધર્મનું આવું વિકૃત સ્વરૂપ પ્રસ્તુત કરવામાં આવે છે, ત્યારે ત્યારે સમાજનો મોટાભાગનો શ્રેષ્ઠ વર્ગ સંસારથી વિરક્ત થઈ જાય છે. આજ વર્ગ બીજા વર્ગને સન્માર્ગ બતાવવાનું સામર્થ્ય ધરાવે છે પરન્તુ જન-સાધારણ આ વર્ગના શ્રેષ્ઠ પ્રભાવથી વંચિત રહી જાય છે અને ઘોર પતન તરફ દોરાઈ જાય છે.

મહાભારતના યુદ્ધ પછી રાષ્ટ્ર અને જાતિના નિર્માણ માટે શ્રેષ્ઠ સાહિત્યની રચના ન થઈ શકી. સાથે જ જે સાહિત્ય, ઉપનિષદાદિ ગ્રન્થ હતા એના મિથ્યા અર્થ કરવામાં આવ્યા - લોકને છોડીને પરલોક માટેના યત્નો કરવાની પ્રેરણા અપાવા લાગી.

મહાભારતમાં મહર્ષિ વ્યાસે અને શ્રી કૃષ્ણે ગીતામાં એ વાત ને સ્પષ્ટ કરવાનો પુરુષાર્થ કર્યો છે કે સંસારનો ત્યાગ કરવો ન તો સંભવ છે કે ન તો ઉપયુક્ત. એને સુધારવાથી જ પરલોકના સુધારની સમ્ભાવના છે. તેમ છતાં દેશમાં એવા વિદ્વાનો આવતા ગયા જે લોકને ત્યાજ્ય અને પરલોકને આવકાર્ય કહેતા હતા.

ગીતાનું પૂર્ણ પ્રવચન એ વાતને સ્પષ્ટ કરવા માટે જ છે કે કુલ-ધર્મ અને કુલ-ક્ષયનો દેશ તથા જાતિ અને રાષ્ટ્રીય ધર્મનો જ અભિપ્રાય છે.

गुरु पूर्णिमा दिवस आयोजित

12 जुलाई 2014 को आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर, लुधियाना में गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेश जी खन्ना ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रचना जी मल्हौत्रा पधारी। गायत्री मन्त्र एवं ईश-स्तुति के प्रथम मन्त्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। श्री सुरेश जी मुंजाल की उपस्थिति में गणमान्य आर्य महानुभावों ने अध्यक्ष जी एवं मुख्य अतिथि जी का पुष्प मालाओं से तथा ब्र. ने गुलदस्ते भेंट कर स्वागत किया।

गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने अध्यक्ष जी एवं मुख्य अतिथि जी का परिचय दिया। उन्होंने गुरु पूर्णिमा की बधाई देते हुए कहा कि यह परम्परागत पर्व गुरु-शिष्य के संबंध पर आधारित है। गुरु शब्द दो वर्णों के मेल से बना है। 'गु' का अर्थ है-अंधकार और 'रू' का अर्थ है-दूर करने वाला अर्थात् अज्ञानता के अंधकार को दूर करने वाले को गुरु कहते हैं। गुरु की पदवी बहुत ऊँची है।

मंच संचालन दसवीं कक्षा की ब्र. लक्ष्मी ने किया। ब्र. ने समस्त अध्यापिकाओं का पुष्प मालाओं से स्वागत किया। ब्रह्मचारिणियों ने मन्त्र, भजन, भाषण, गीत आदि कार्यक्रम प्रस्तुत करके तथा अपनी अनुशासन व्यवस्था से सभा को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। आचार्य नवदीप जी ने गुरु पूर्णिमा के महत्व पर विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि जी ने कहा कि चंद्र के समान यह सुन्दर दिवस गुरु के प्रति आभार प्रकट करने का दिवस है। गुरु वह मजबूत कवच है जिसके पास शिष्य अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है। प्रधानाचार्या श्रीमती सतीश तलवार ने मुख्य अतिथि जी को धार्मिक पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया। अध्यक्ष जी ने गुरु का महत्व बताते हुए कहा कि गुरु मानव जाति के सुन्दर व सुगंधित पुष्प होते हैं तथा प्रकाश व वायु की तरह भेद-भाव से रहित होकर सबके लिए समान होते हैं। मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने धार्मिक पुस्तक भेंट कर अध्यक्ष जी को सम्मानित किया। गुरुकुल की अधिष्ठात्री डॉ. सुमन जी शारदा ने सभा में उपस्थित आर्य बंधुओं का धन्यवाद किया। शांति गीत के साथ सभा सम्पन्न हुई।

मानव का जीवन मिला, कर ले ऐसे काम।
तेरा जीवन कर चले, जग में तेरा नाम
- नरेन्द्र आहुजा विवेक, मो. 09467608686

समाचार दर्पण

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय में इस वर्ष के नव सत्र में प्रविष्ट हुए नये ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार मुख्य यज्ञशाला में आयोजित हुआ। यह संस्कार गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें भारत के 13 प्रांतों एवं नेपाल से आये इन ब्रहाचारियों ने वैदिक संस्कृति के संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए संकल्प लिया। इस अवसर पर स्थानीय ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार, कार्यालय संचालक श्री रमेश मेहता, स्वामी नवीनानन्द जी, टंकारा ग्राम के पंचायत प्रमुख एवम् सभी महाविद्यालय के अध्यापकगण उपस्थित थे। वेदारंभ संस्कार में जब छात्रों ने उद्घोष किया '' जीवपुत्रो मम आचार्य:'' अर्थात् मेरा आचार्य जीवित पुत्र हो, इस कथन से दिशायें भी स्तब्ध हो गईं प्रतीत हो रही थी। यज्ञ स्थल पर उपस्थित सभी महानुभाव भावुक हो उठे और विशेषकर उपस्थित जनसमूह में आयी माताओं की अश्रुधारा बह उठी। जब इस तरह के छात्र आर्ष गुरूकुलों से निकलकर वैदिक संस्कृति के अुनसार अपने जीवन को बढ़ाते हुए आगे बढ़ेंगे तो निश्चित ही वैदिक संस्कृति का संरक्षण ही नहीं होगा अपितु वेद के प्रशंसित जीवन को जीने वाले नागरिक भी होंगे।

आप सभी की जानकारी के लिए टंकारा स्थित इस महाविद्यालय में जहां महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित परीक्षाओं में प्रविष्ट छात्र, ब्रह्मचारी तैयार किये जाते हैं। वहीं बाल्यकाल से ही वेद प्रचार एवम् कर्म काण्ड के लिए वैदिक विद्वान, पुरोहित आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। अन्त में आचार्य श्री द्वारा आर्शीवचन देते हुए नये प्रविष्ट ब्रह्मचारियों को कहा कि अपने जीवन में स्वाध्याय, सहनशीलता एवम् सेवा तीन बातों का अवश्य ध्यान रखें। आर्ष गुरुकुल पद्धति में अनुशासित जीवन जीने की कला जो सिखाई जाती है उसे हमेशा तन्मयता से ग्रहण करें।

ऋषि दयानन्द जी की पवित्र जन्मभूमि टंकारा में गुरुकुल में ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार कराते हुए आचार्य रामदेव जी

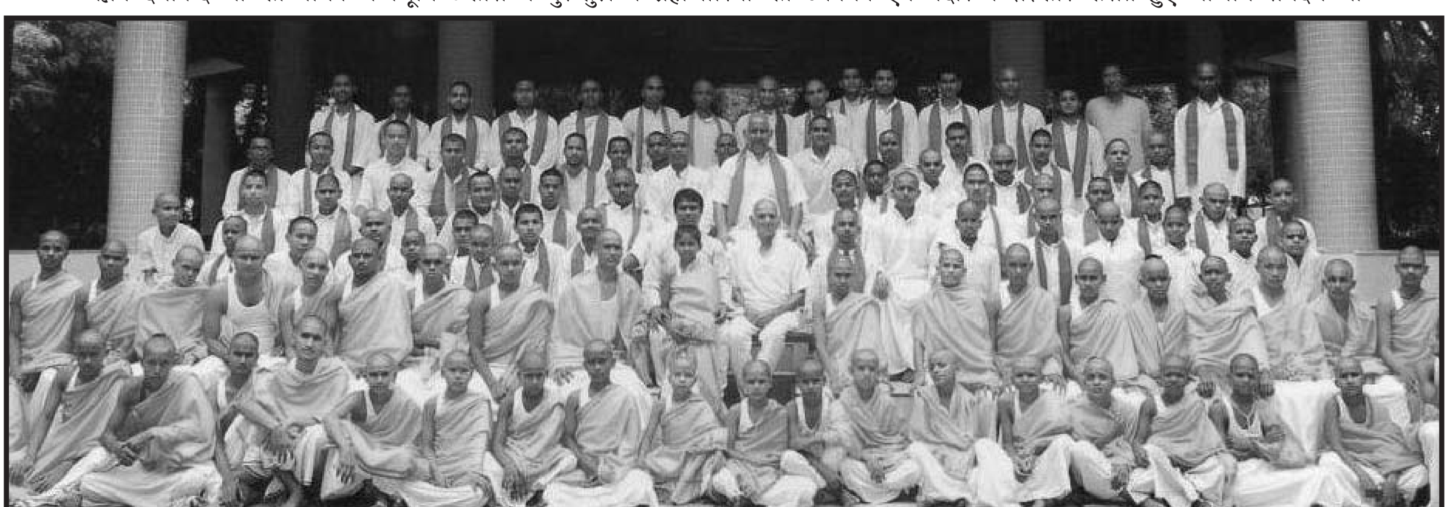

उपरोक्त संस्कार के उपरानत नये ब्रह्मचारियों एवम् पुराने ब्रह्मचारियों का सामुहिक चित्र

गुरुकुल नोएडा के बढ़ते कदम

भारत के प्रतिष्ठित गुरुकुलों में **आर्ष गुरुकुल नोएडा** का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। समय की दृष्टि से आर्ष गुरुकुल सबसे अर्वाचिन है किन्तु थोड़े समय में ही आर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने बड़ी-बड़ी सफलताऐं प्राप्त की हैं। आर्ष गुरुकुल के ब्र. कशिश आर्य ने बी.ए. संस्कृत (ऑनर्स) में दिल्ली विश्वविद्यालय में टॉपर रहते हुए सर्वाधिक अंक प्राप्त किए हैं तथा गोल्ड मेडल भी प्राप्त किया है। दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत के लिए बी.एड. की अर्हता भी ऊँची मेरिड से प्राप्त की है। ब्र. राज किशोर ने जे.आर.एफ. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आर्ष गुरुकुल का गौरव बढ़ाया है तथा दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रतिष्ठित हंसराज कॉलेज में पढ़ाने का गौरव भी हासिल किया है। वर्तमान में जे.एन.यू. से एम.फिल. कर रहें हैं। ब्र. श्याम सुन्दर ने नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी के अनेक शिष्यों ने अनेक प्रकार के सफलताऐं प्राप्त की है। उच्च कोटि के विद्वान आचार्य जी के गुरुकुल संचालन की विधि सबसे अलग है। यही सफलता का राज है।

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 14 से 21 सितम्बर 2014 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यो एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा दर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद-पारायण यज्ञ भी होता है। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन न. 09419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

श्रावणी महायज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न

महिला आर्य समाज, मॉडल टाऊन द्वारा आयोजित श्रावणी महायज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ में स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी आर्यवेश जी एवम् डॉ. प्रमोद योगार्थी, प्राचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय तथा डॉ. ज्ञानवती आर्या, गुरुकुल खानपुर के सारगर्भित, दार्शनिक एवम् प्रभावशाली प्रवचन हुए। स्वामी दिव्यानन्द जी को 75वें जन्म दिवस पर अभिनन्दन किया गया। श्रीमती सुनीता सतीजा, श्रीमती अलका आहूजा एवम् श्री ओ.पी. डावर ने मन-मोहक भजन सुनाए।

गायत्री महायज्ञ एवं वेद प्रवचन

आर्य समाज अंधेरी (प.) में गायत्री महायज्ञ तथा वेद प्रवचन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्म आचार्य विनय विद्यालंकार जी (उत्तराखण्ड) से पधारे। इनके साथ सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री प्रभाकर शर्मा जी के भजनों का कार्यक्रम हुआ।

सत्संग भवन का निर्माण

यह सत्संग भवन श्री सत्यपाल जी, न्यू राजधानी एन्कलेव, नई दिल्ली निवासी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज जी के स्वर्गवास पर उनकी प्रार्थना सभा में पारित प्रस्ताव के अनुसार अपनी धर्मपत्नी की स्मृति में आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर, राजस्थान में कन्याओं के लिए अपनी पुण्य कमाई से बनवाया है।

उपनिषद् तथा वेदान्त दर्शन अध्ययन का स्वर्णिम अवसर

पिछले एक वर्ष से शिक्षा, अष्टाध्यायी, व्याकरण आदि वेदांग एवं योगदर्शन, न्यायदर्शन आदि उपागों का अध्ययन-अध्यापन ऋषि प्रणाली से चल रहे हैं। इसी श्रृंखला में आध्यात्मिक उन्नति का अनुपम तथा साधना के रहस्यमय ग्रन्थ ग्यारह उपनिषद् एवं तत्पश्चात् सम्पूर्ण वेदान्तदर्शन (ब्रह्मसूत्र) का अध्यापन ऋषि पद्धति से वेदानुकूल व्याख्या सहित नियमितरूप से स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य) द्वारा वानप्रस्थ साधक आश्रम में अतिशीघ्र प्रारम्भ होने जा रहा है। संस्कृत से अनभिज्ञ विद्यार्थियों को साथ-साथ संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था भी रहेगी।

गुरुकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व आध्यात्मिक ग्रन्थ अध्ययन में रूचि रखने वाले विद्यार्थी अपना पूर्ण परिचय, नाम, आयु, पता, दूरभाष संख्या, शैक्षणिक योग्यता आदि vaanaprastharojad@gmail.com पर भेजें अथवा व्यवस्थापक, वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पो. सागपुर, जि. साबरकांठा, गुजरात-383307 पर पत्रव्यवहार करें। सायं 07.30 से 08.30 बजे + 91 94 26 408026 में सम्पर्क करें तथा सुबह 09.00 से सायं 06.00 बजे कार्यालय में सम्पर्क हेतु 02770, 287417, 9427059550

वैदिक शोध संगोष्ठी सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, टीकरी मेरठ में स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के तत्वाधान में एक राष्ट्रीय वैदिक शोध-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विधिवत् गोष्ठी का आरम्भ करते हुए सर्वप्रथम स्वामी अनन्त भारती जी ने वेदों में वर्णित नैतिकता में मित्रता, मधुरभाषण आदि तत्वों की विस्तारपूर्वक चर्चा की। सारस्वत अतिथि डॉ. कन्हैयालाल पाराशर जी ने वेद और नीति को परस्पर पर्यायवाची बताते हुए सत्य, दम और त्याग की चर्चा की। डॉ. मानसिंह जी ने 'ऐसा करना चाहिए, ऐसा नहीं करना चाहिए' यह बताना नीति माना। डॉ. नृसिंह चरण पण्डा जी ने कहा कि वेद में आचार, विचार की नैतिक बातों का ही वर्णन है। डॉ. एस. डी. कौशल जी के अनुसार नैतिक शिक्षा चरित्र गठन की एक प्रक्रिया है। डॉ. देवेन्द्र सिंह सोलंकी जी ने नैतिक मूल्यों के मूलाधार वेद विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. दुर्गाप्रसाद मिश्र जी ने नैतिक तत्वों में घुसे हुए प्रदूषण को दूर करने की बात कही तो डॉ. श्रीवत्स शास्त्री ने कहा नैतिक तत्व तो मार्गमात्र है वस्तुत: आचरण का महत्व है। इस प्रकार 'वैदिक वाङ्मय में नैतिक तत्व' विषय पर आयोजित इस शोधसंगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय से आए डॉ. योगेन्द्र भानु, डॉ. दीनदयाल, डॉ. विनोद, डॉ. भावप्रकाश, डॉ. सत्यकेतु, डॉ. वेदव्रत आदि ने अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। जिन्हें त्रैमासिक शोधपत्रिका पावमानी में प्रकाशित किया जायेगा। प्रोफेसर राजेश्वर प्रसाद मिश्र ने अध्यक्षशीय भाषण दिया। अन्त में आशीवर्चन देते हुए गुरुकुल के कुलपति स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्शीवचन में कहा कि संविधान एवं नीति में अन्तर है संविधान दण्ड के बल पर मनवाया जाता है और नैतिक मूल्य एक अनुभूति है, जो अन्तरात्मा से पैदा होते हैं। तदुपरान्त शान्तिपाठ के साथ शोधसंगोष्ठी सम्पन्न हुई।

(पृष्ठ 10 का शेष)

अगर धर्माचार्यो को वहस ही करनी है तो सारे धर्माचार्य मिल बैठकर इन समस्याओं का कारण और निराकरण खोजें कि आखिर क्यों?

1. दुनिया में सारे मुसलमान लगभग एक हैं, सारे ईसाई एक है, सारे बौद्ध एक है सारे पारसी एक है तो फिर हिन्दू एक क्यों नहीं? यहां तक कि उनके मस्जिद एक है, गिरिजा घर एक है, बौद्व मठ एक हैं तो हमारे मन्दिर एक क्यों नहीं।

2. सारी दुनियां को एकेश्वरवाद का संदेश देने वाली आर्यजाति आज खुद क्यों बहुदेवताबाद के दलदल में फँस गई है।

3. कभी दुनियां में केवल आर्य धर्म था और आर्य धर्म से ही सभी उत्पन्न हुए फिर आज हम क्यों विश्व समुदाय के सामने अल्पसंख्यक हैं।

4. पुरी दुनिया में केवल सनातन वेदिक धर्म ही धर्म है वाकी सभी मत पथ एवं सम्प्रदाय है क्योंकि उन मतों के कोई न कोई प्रवर्तक है पर क्यों कोई बता सकता है कि आर्यधर्म के प्रणेता कौन है फिर भी हमारी स्थिति ऐसी कैसे बन गई कि हम विनाश के कगार पर आ गए।

5. आज भारत दुनियां में गो मौस का नियौतक एक प्रमुख देश बन गया है जिस वजह से अमृत स्मान दूध देने वाली गायों की हत्या प्रतिवर्ष एक करोड़ की हो गई हैं।

6. आज पूरे देश में हत्या लूट, बलात्कार और अपहरण का बाजार गर्म है और मांस और शराब का भयंकर सेवन हो रहा है, जिस वजह से पूरे समाज में अपराध का बोलवाला है।

7. आज इस देश में वेजान नारी मूर्त्तियों की तो पूजा हो रही है पर जीवन्त नारी को भोग की वस्तु के अलावा कुछ नहीं समझा जाता और रोमांश अपने चरम सीमा रेप टील डेथ तक पहुंच गया है।

अत: हम सभी धर्माचार्यो से मार्मिक अपील करते हैं कि मनुष्य को मनुष्य ही रहने दीजिए उसे भगवान मत बनाइये और समाज को ढोंग आडम्बर, पाखण्ड और अंधविश्वास में मत ढकेलिये। आप सब नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण के कार्य को अपने हाथ में लेकर देश को सवल बनावे।

– आर्य समाज, मुजफ्फनगर

टंकारा में बोधोत्सव 2015 का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16, 17, 18 फरवरी 2015 को किया जायेगा।

आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

(पृष्ठ 1 का शेष)

तक जीवन पर्यन्त अदीन, स्वाधीन रहकर जीवन की बात कही गई है। इसलिए मनुष्य से यह अपेक्षित है कि वह स्वाधीनता के सही अर्थ को समझ मन बुद्धि इन्द्रियों को बस में करके उनका स्वामी बन अपने सामाजिक, राष्ट्रीय दायित्वों, कर्तव्यों का पालन करता हुआ भौतिक प्रगति, आध्यात्मिक उन्नति और मानसिक शांति के पथ पर चले। ऐसा स्वाधीन नागरिक सामाजिक नियमों वेद अनुकूल धर्म मार्ग पर चलता हुआ व्यक्तिगत, संविधान का पालन करता हुआ भौतिक प्रगति, आध्यात्मिक उन्नति और मानसिक शांति के पथ पर चले। ऐसा स्वाधीन नागरिक सामाजिक नियमों वेद अनुकूल धर्म मार्ग पर चलता हुआ व्यक्तिगत, संविधान का पालन करता हुआ व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति में सहायक सिद्ध होवे।

– 922/28 फरीदाबाद, प्रधान, केंद्रीय सभा फरीदाबाद

सभी दानों में श्रेष्ठ है विद्यादान

सभी दानों में विद्यादान सर्वश्रेष्ठ होता है। विद्यादान से विद्यार्थियों को जो धन मिलता है वह ऐसा धन होता है जिसे जितना खर्च करें उतना ही बढ़ता चला जाता है। विद्वानों ने कहा है ज्यों खर्चो त्यों-त्यों बढ़ें, बिन खर्चे घट जात। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरखेड़ा में पाठ्यसामग्री वितरण के अवसर पर व्यक्त किये। कार्यक्रम में आर्य समाज विज्ञाननगर के प्रधान जे. एस. दुबे व आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि रोजगार तथा व्यवसाय की शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण की शिक्षा देना भी आवश्यक है। नैतिक शिक्षा से समाज संस्कारवान बनता है। इस अवसर पर आर्य विद्वान रामदेव शर्मा ने विद्यार्थियों को माता-पिता व बड़ों का आदर करने की बात कही। कार्यक्रम में आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा विज्ञान नगर आर्य समाज के सौजन्य से प्रदत्त शिक्षण सामग्री का छात्र-छात्राओं को वितरण किया गया। जिसमें उन्हें स्कूल बैग, कापियां, पेन आदि वितरित किये गये। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती विमला खरोडिया ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत करते हुए आर्य समाज द्वारा समाज सेवा के अन्तर्गत संचालित कार्यो की प्रशंसा की और पाठ्यसामग्री के लिए विद्यालय परिवार की ओर से धन्यवाद किया। विद्यालय की व्याख्याता श्रीमती सुधा शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

प्रधान- श्री आदित्य प्रकाश गुप्त **मन्त्री**- श्री अमित कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री यशपाल गुप्त

आर्य समाज शहर बड़ा बाजार, सोनीपत, हरियाणा

प्रधान- श्री सुभाष चांदना **मन्त्री**- श्री प्रवीण आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री दीपक तलवाड़

आर्य समाज नकुड़, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

प्रधान- श्री अभय सिंह सैनी **मन्त्री**- श्री भूपेन्द्र गोयल

कोषाध्यक्ष- हरिदत्त आर्य

आर्य समाज, राजगढ़, अलवर, राजस्थान

प्रधान- श्री धर्मसिंह आर्य **मन्त्री**- श्री गोपाल सिंह आत्रेय

कोषाध्यक्ष- श्री कुलदीप सिंह

आर्य समाज, सेक्टर-35 एवं 43, चण्डीगढ़

प्रधान- श्रीमती सुदेश गुप्ता **मन्त्री**- श्री वेद प्रकाश आर्य

कोषाध्यक्ष- श्रीमती सरोज बाला

ऋषि जन्मगृह को विश्व दर्शनीय बनाने हेतु विनम्र निवेदन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा अपने स्थापना काल से ही ऋषि जन्म भूमि को विश्व दर्शनीय बनाते हेतु प्रयासरत है। पिछले लगभग 40 वर्षो में वहां जो प्रगति हुई है वे आर्य जनता से छुपी हुई नहीं है। आज से पूर्व वर्षो में जहां ऋषि जन्म भूमि में ऋषि भक्तों के लिए ठहरने के लिए उचित व्यवस्था नहीं थी वही आज असंख्य सुविधाजक फ्लैट कमरो का निर्माण हो चुका है। इसके अतिरिक्त कई बड़े हॉल एवम् नवनिर्मित सत्संग भवन प्रमुख है। जन्मभूमि स्थित यज्ञशाला एक अनुपम शैली से बनाई गई है जिसकी पुरे विश्व में चर्चा है। कुछ कमरे विद्यार्थियों के कक्षा के रूप में विकसित किए गए हैं। यह सभी आप ऋषि भक्तों के आर्थिक सहयोग से ही संभव हो पाया है।

पिछले वर्ष ऋषि भक्तों के सहयोग से टंकारा के प्रमुख मार्ग पर जन्म भूमि से सटी एक दुकान को क्रय किया गया था। वे भी इसलिए क्योंकि इस दुकान के पीछे सटा हुआ मकान हमें खरीदना था जिससे ऋषि गृह के लिए एक खुला आंगन प्राप्त हो सक और मुख्य मार्ग से ही जन्म स्थान पर पहुंचा जा सके।

हर्ष का विषय है कि मकान मालिक जो कि विक्रय के लिए तैयार नहीं था वे अब 20.5 लाख में विक्रय करने के लिए तैयार हो गया है। शीघ्र ही कुछ अग्रिम राशि देकर क्रय-विक्रय के कागजात तैयार कर पूरे पैसे देने का समय निर्धारित कर लिया जाएगा। **(इसी पृष्ठ पर खरीदी गई दुकान व खरीदे जाने वाला मकान को मानचित्र बनाकर समझा जाने का प्रयास किया गया है।)**

आप सभी ऋषि भक्तों से प्रार्थना है कि पूर्व की भांति इस कार्य में भी आप अवश्य योगदान देवें। क्योंकि ऋषि गृह को विश्व दर्शनीय बनाने हेतु उनके आस पास के जमीन को प्राप्त करना सबसे पहली प्राथमिकता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस कार्य हेतु अधिक से अधिक राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम केवल खाते में चैक/ड्राफ्ट द्वारा आर्य समाज 'अनारकली' मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करेंगे। इसके लिए हम आपके अत्यन्त आभारी रहेंगे। 50,000/- रूपये अथवा उससे अधिक राशि देने वाले के नाम पट पर अंकित किए जाएंगे।

ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर धारा 80 जी के अर्न्तगत कर मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

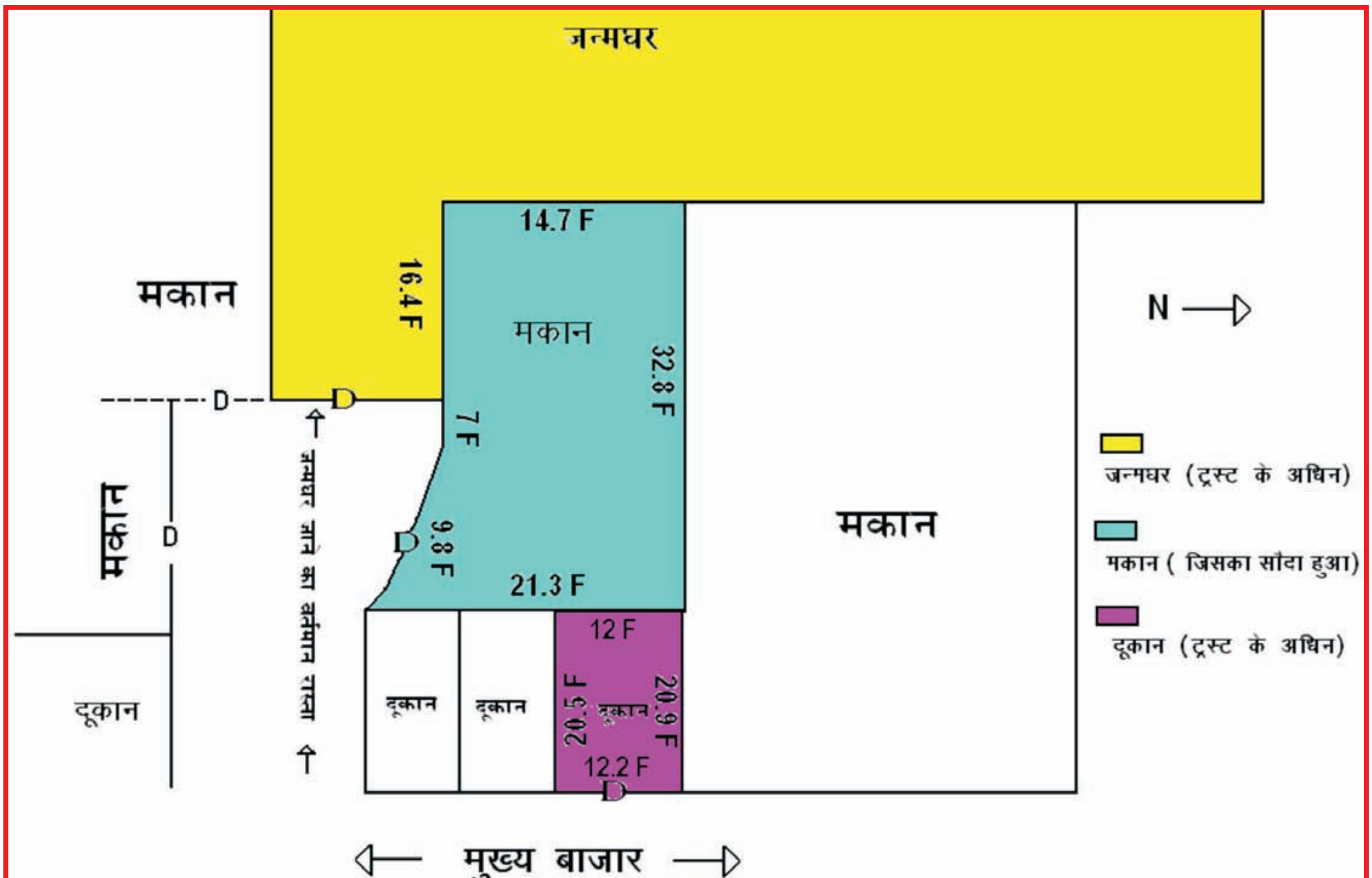

अपने गुणों पे घमंड के कारण, व्यक्ति दूसरों के अवगुणों को देखता है और दूसरों के अवगुणों को देख कर, व्यक्ति का घमंड और अधिक मजबूत हो जाता है।

टंकारा समाचार सितम्बर, 2014

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-9-2014

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.08.2014

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय